व्यावसायिक बकरी पालन कैसे शुरू करें

अनादि

एक्ट नाऊ फॉर अल्टरनेटिव डेवलपमेंट इनिसिएंटिव

मकान न. 19, न्यू पुनाईचक बोरिंग केनाल रोड़ पटना, बिहार

व्यावसायिक बकरी पालन कैसे शुरू करें?

अनादि

विषय सूची

भूमिका			5
पहला कदम	:	आवास	9
दूसरा कदम	:	चयन	20
तीसरा कदम	:	आहार	25
चौथा कदम	:	फार्म-प्रबंध	35
पांचवां कदम	:	प्रजनन-प्रबंध	43
छठा कदम	:	स्वास्थ्य-प्रबंध	52
सातवां कदम	:	बैंक, सहकारिता एवं बाजार	62

भूमिका

बकरी पालन की तीन विधियाँ होती हैं – सामान्य या विचरण पद्यति, अर्ध सघन पद्यति, एवं सघन पद्यति। गांव के गरीब लोग जो दो-चार बकरियों को खेत-सड़क पर चरा कर पालते हैं उसे सामान्य या विचरण पद्यति कहा जाता है। दूसरा तरीका जिसमें आधा समय खेत या जंगल में चरा कर और आधा समय बाड़े के अंदर चारा खिला कर पाला जाता है उसे अर्ध सघन पद्यति कहा जाता है। तीसरा तरीका सघन पद्यति कहलाता है, जिसमें पूरा समय बकरियों को बाड़े के अंदर चारा खिला कर पाला जाता है। इस पद्यति में बकरियाँ खेत या जंगल में चरने बिलकुल नहीं जाती हैं। व्यावसायिक बकरी पालन के लिए यही पद्यति व्यावहारिक है।

व्यावसायिक बकरी पालन या गोट-फार्मिंग बिहार के लिए एक बेहतरीन व्यवसाय हो सकता है । मांस की मांग बहुत ज्यादा है और सप्लाई बहुत कम। इसके एक्सपोर्ट की भी भारी संभावना है। इसमें कोई प्रतियोगिता नहीं, कोई मारा-मारी नहीं, किसी कंपनी पर कोई निर्भरता नहीं। माल तैयार कीजिए और हाथों-हाथ बेचिए। होली-दशहरा, ईद-बकरीद और नववर्ष के समय मांस की कीमतों में जो उछाल होता है वह सबको मालूम है। इस काम को कम पूंजी से शुरू कर आप आगे करोड़ों का कारोबार बना सकते हैं।

तो यदि आपने व्यावसायिक बकरी पालन शुरू करने या बकरी-फार्म बनाने का निर्णय ले लिया है तो इस पुस्तिका के अध्ययन में आपका स्वागत है। परंतु सबसे पहले यह जान लीजिए कि राज्य में पहले भी कुछ लोगों ने बकरी-फार्म चलाना शुरू किया था, परंतु वे फेल हो गए। उनकी असफलता के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार थे:

- बिना जानकारी के ही फार्म प्रारंभ
- बहुत बड़े आकार के फार्म से प्रारंभ
- अन्य राज्यों से बकरियों की खरीद
- आवास, उपकरण, चारा और टीकाकरण की अपर्याप्त व्यवस्था

- रोगों के प्रति अज्ञान और ऊँची मृत्यु दर
- पशु चिकित्सकों में भी बकरी रोगों के प्रति अनभिज्ञता
- दवाओं की अनुपलब्धता
- बकरी फार्म चलाने से ज्यादा बैंक लोन पर नजर
- उचित संस्थाओं से सहायता का अभाव

आप यदि चाहें तो दूसरों की असफलता को अपनी सफलता में बदल सकते हैं। इसके लिए छोटे पैमाने से यानी 20-40 बकरियों से काम को शुरू करें। सिर्फ स्थानीय/देसी बकरी ही खरीदें। इस पुस्तिका तथा अन्य जगहों से आवास, उपकरण, चारा, और टीका से संबंधित जानकारी इकट्ठी करने के बाद ही काम शुरू करें। सरकारी योजनाओं और ऋणों का ईमानदारी से उपयोग करें। अपने गांव और इलाके के लोगों के साथ मिलकर बकरी पालन संघ बनाएं और केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान तथा अनादि जैसी संस्थाओं के साथ लगातार संपर्क में बने रहें।

इस पुस्तिका को आम लोगों के लिए सरल भाषा में लिखा गया है। व्यावसायिक बकरी पालन से संबंधित सभी कामों को सात कदमों में बांटा गया है। पहले तीन कदम काम शुरू करने से पहले तैयारी के लिए हैं और उसके बाद के तीन कदम फार्म के रख रखाव से संबंधित हैं। इस पुस्तिका को 20 बकरियों और 1 बीजू बकरे के एक यूनिट शुरू करने वालों की दृष्टि से लिखा गया है। यदि आप एक से ज्यादा यूनिट लगाना चाहते हैं तो इसी के अनुसार जमीन, चारा, मजदूरी, खर्चा आदि बढ़ाते चले जाएँ। बीस बकरियों को साल में दो बार कम से कम चालीस-चालीस मेमने होंगे। यानी साल भर में बाड़ों में बकरियों की संख्या कुल 20+40+40 यानी 100 होगी। इसलिए एक यूनिट में आवास, चारा, दवा आदि का हिसाब बीस वयस्क, चालीस शिशु और चालीस किशोर के आधार पर लगाया गया है। यदि आप बड़े पैमाने यानी 100-500 बकरियों वाले 10 से 25 यूनिट लगाना चाहते हैं तो हमारे कार्यालय से संपर्क कर अलग से परियोजना पर चर्चा कर सकते हैं।

इस पुस्तिका को एक बार पूरा पढ़ जाएँ और उसके बाद अपने काम के अनुसार एक-एक अध्याय को दो-तीन बार पढ़ें। यदि आप आवास बना रहे हैं तो पहला कदम, यदि बकरी खरीदने जा रहे हैं तो दूसरा कदम, यदि चारा उगाने की तैयारी करनी हो तो तीसरा कदम, इस प्रकार अलग-अलग पढ़ते रहें। यह कोई सैद्धांतिक किताब नहीं है- यह प्रैक्टिकल गाइड है- आपको रास्ता

दिखाता रहेगा-आप चलते रहें। अधिक जानकारी के लिए केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा द्वारा प्रकाशित सामग्रियों का अध्ययन करते रहें।

फार्म प्रबंध, प्रजनन और रोग निदान से संबंधित कई काम ऐसे हैं जिन्हें बिना पूर्व अनुभव के नहीं करना चाहिए। कम से कम शुरू में आप पशुचिकित्सक तथा अन्य जानकार व्यक्तियों की मदद अवश्य लें। अपने मन से दवाई आदि न दें। प्रसव के समय गांव की किसी अनुभवी महिला की मदद लें। इस हैंडबुक का उद्देश्य आपको डाक्टर बनाना नहीं है, आपको सिर्फ मोटी जानकारी दी जा रही है ताकि डाक्टर के आने से पहले आप भी परिस्थिति को थोड़ा समझ सकें। कभी-कभी बीच रात में केाई काम पड़ जाता है तो आपको थोड़ी जानकारी इमर्जेंसी के लिए रहनी चाहिए। बस ! इस जानकारी के आधार पर खुद इलाज करना नहीं शुरू कर दें।

अंततः इस पुस्तिका में दी गई जानकारियों के लिए हम केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, फरह, मथुरा के वैज्ञानिकों और प्रकाशनों के हृदय से आभारी हैं। यह पुस्तिका सिर्फ जन जागरण का एक प्रयास है।

डा. प्रदीपकांत चौधरी
सचिव
अनादि

पहला कदम : आवास

स्थान का चुनाव

बकरी फार्म शुरू करने के लिए सबसे पहला काम है : एक अच्छी जगह का चुनाव। बकरी आवास बनाने के लिए ऐसी ऊँची जगह का चुनाव करें, जहाँ बरसात में भी पानी जमा नहीं होता हो। यह जगह तालाब के किनारे या आम-लीची के बगीचे के बहुत नजदीक भी नहीं होनी चाहिए। बकरी फार्म बनाने के लिए ऐसी जगह का चुनाव करें जहाँ पूरी धूप और खुली हवा आती हो। यह जगह घर से नजदीक हो तो सुरक्षा के लिहाज से अच्छा होगा। घर के नजदीक किसी ऊँचे खेत में बकरी आवास बनाना सबसे अच्छा होता है।

कितनी जमीन चाहिए

एक यूनिट यानी 20 बकरियों का फार्म बनाने के लिए 300 वर्ग मीटर जमीन चाहिए। अपने जिले में प्रचलित नाप के अनुसार यदि देखेंगे तो यह करीब दो-तीन कट्ठा के आसपास बैठेगा। जिनके पास ज्यादा जमीन है वे बड़े आकार का फार्म बना सकते हैं। *(पांच यूनिट के फार्म का डिजायन आप हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।)*

बकरी फार्म का डिजायन

बकरी फार्म के तीन प्रमुख हिस्से होते हैं: पहला बकरी-घर, दूसरा बकरी-बाड़ा और तीसरा विविध क्षेत्र। बकरी-घर गर्मी-सर्दी, बरसात से बकरियों को बचाने के लिए बनाया जाता है, जबकि बाड़ा में दिन के समय बकरियाँ खुले में घूमती हैं। विविध क्षेत्र में बकरियों के लिए बीमार-घर, भूसा घर, बोतो घर और ऑफिस की व्यवस्था होती है।

सबसे पहले 20 मीटर लंबा और 15 मीटर चौड़ा एक प्लाट लें। 15 मीटर की चौड़ाई वाले हिस्से को तीन भागों में चूना का निशान डाल कर बांट दें।

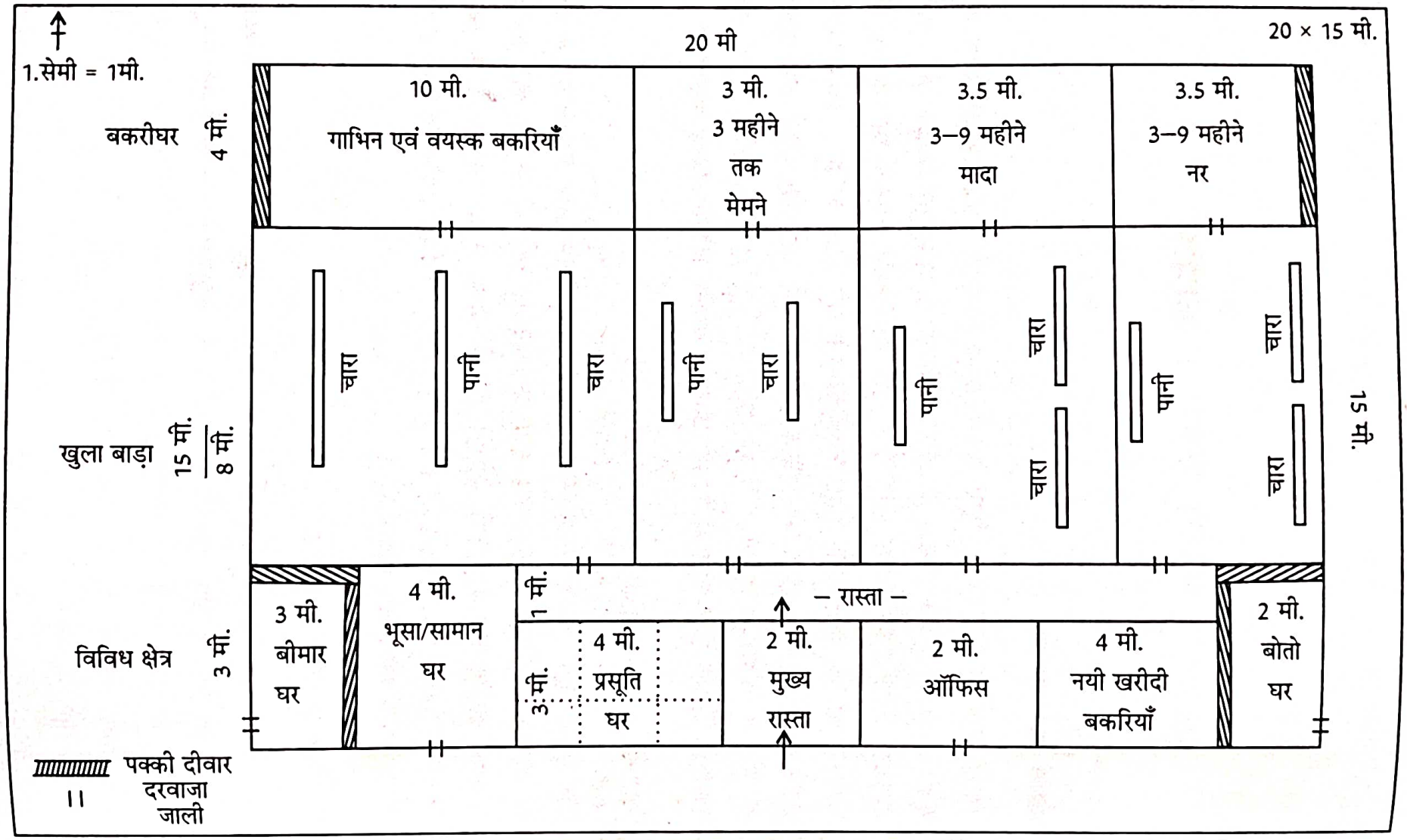
1.सेमी = 1मी.
20 मी
20 × 15 मी.
15 मी.
बकरीघर
4 मी.
10 मी.
गाभिन एवं वयस्क बकरियाँ
3 मी.
3 महीने
तक
मेमने
3.5 मी.
3–9 महीने
मादा
3.5 मी.
3–9 महीने
नर
खुला बाड़ा
15 मी.
8 मी.
चारा
पानी
चारा
पानी
चारा
पानी
चारा
चारा
पानी
चारा
चारा
विविध क्षेत्र
3 मी.
3 मी.
बीमार
घर
4 मी.
भूसा/सामान
घर
1 मी.
– रास्ता –
3 मी.
4 मी.
प्रसूति
घर
2 मी.
मुख्य
रास्ता
2 मी.
ऑफिस
4 मी.
नयी खरीदी
बकरियाँ
2 मी.
बोतो
घर
पक्की दीवार
दरवाजा
जाली

पहला हिस्सा 4 मीटर चौड़ा, दूसरा 8 मीटर चौड़ा और तीसरा 3 मी० चौड़ा रखें। 20 मी० लंबे और 4 मी० चौड़े वाले हिस्से में हमें बकरी-घर बनाना है, जबकि 8 मीटर चौड़े वाले हिस्से को बांस या लोहे की जाली से घेर कर खुला बाड़ा-क्षेत्र बनाया जाना चाहिए। तीन मीटर चौड़े वाले तीसरे हिस्से में हमें प्रवेश द्वार, ऑफिस, भूसाघर, बोतो घर, प्रसूति घर, बीमार घर आदि की व्यवस्था करनी है। हमने यहाँ एक माडल डिजायन दिया है, परंतु आप अपनी जमीन के आकार और स्थिति को देखते हुए इसमें बदलाव कर सकते हैं। छोटी शुरूआत के लिए सिर्फ फूस का घर और बांस जाली से आंगन घेर कर काम चला सकते हैं।

कैलकुलेटर

उम्र के अनुसार बकरियों के लिए जगह की आवश्यकता वर्ग०मी० में

उम्र	आवास	बाड़ा
3 महीने तक	0.2	0.4
3-9 महीने	0.6	1.2
9-12 महीने	1.0	2.0
गाभिन/दूध देनेवाली बकरियां	1.5	3.0
बीजू बकरा	1.5	3.0

इस आधार पर स्वयं गुणा करके बकरियों की संख्या अनुसार जगह का माप निकाल लें जैसे 20 वयस्क बकरी के लिए -

आवास का आकार = 20 × 1.5 = 30 वर्ग मी० (आवास)

बाड़ा का आकार = 20 × 3 = 60 वर्ग मी० (बाड़ा)

40 बच्चे 0-3 महीने के आवास = 40 × .2 = 8 वर्ग मी०

बाड़ा = 40 × .4 = 16 वर्ग मी०

40 बच्चे 3-9 महीने के आवास = 40 × .6 = 24 वर्ग मी०

बाड़ा = 40 × 1.2 = 48 वर्ग मी०

आदि-आदि।

दिशा

गंगा के मैदान में अन्य जगहों की तरह बिहार में भी बकरी घर की लंबाई पूरब-पश्चिम की दिशा में होनी चाहिए और इससे सटा हुआ बाड़ा उत्तर या दक्षिण की तरफ बनाना चाहिए। बकरी घर में जाने का रास्ता भी उत्तर या दक्षिण से ही बनाना चाहिए क्योंकि पूरब-पश्चिम वाली दीवार को बंद रखा जाता है।

दीवारें

बकरी-फार्म बनाने के पहले तीन सालों में हमें आवास तथा उपकरणों पर कम से कम खर्चा करना चाहिए। एक बार जब इस व्यवसाय से पूरी आमदनी होने लगे तो महंगे किस्म का फार्म बनाया जा सकता है। अभी घर बनाने के लिए गांव में आसानी से प्राप्त सामान जैसे बांस, फूस, खपरैल तथा मिट्टी से ही बकरी घर बनाना चाहिए। पूरब और पश्चिम में दीवारों के लिए ईंट को गीली मिट्टी से जोड़ कर उसके ऊपर सीमेंट से टिपकारी की जा सकती है। यदि संभव हो तो सीमेंट की जोड़ाई भी की जा सकती है। पूरब-पश्चिम की दोनों बंद दीवारें ढलवां यानी ^ आकार की होनी चाहिए, जैसा कि गाँवों में अक्सर होता है। दीवार की चौड़ाई 4 मी०, दोनों किनारों पर ऊँचाई 2.75 मी० और बीचों-बीच ऊँचाई 3.50 मी० होनी चाहिए।

उत्तर की तरफ चार दरवाजों की जगह खाली छोड़ कर पौना मीटर (75 सेंटीमीटर) ऊँची दीवार से घेर देना चाहिए। दक्षिण की तरफ बिना दरवाजा छोड़े पौना मीटर तक पांच ईंच चौड़ी दीवार उठा देनी चाहिए। उत्तर-दक्षिण की इस दीवार पर छत तक बांस या लोहे की जाली लगा देनी चाहिए। यानी 2.75 मी० - .75 मी० = 2.00 मीटर (दो मीटर) ऊँची जाली उत्तर-दक्षिण की दीवारों पर लगेगी। इससे बकरी घर पूरा हवादार बना रहेगा, परंतु बकरियों को ज्यादा हवा शरीर में नहीं लगे इसलिए छोटी दीवार भी दोनों तरफ रहेगी।

छत

छत का आकार ^ की तरह ढलवां रहेगा जैसा गाँवों में होता है। छत फूस की मोटी परत से बननी चाहिए। यदि संभव हो तो उसमें मिट्टी, तारकोल और भूसा का लेप लगा कर उन्नत किस्म की छत बनाई जा सकती है। फूस के ऊपर खपरैल का प्रयोग भी अच्छा रहेगा। परंतु लोहा या एसवेस्टस की चादर का प्रयोग नहीं करें। यह गर्मी में गरम और सर्दी में ठंडा हो जाएगा। जो

बकरियों की वृद्धि के लिए अच्छा नहीं है। किनारे पर छत की ऊँचाई 2.75 मीटर (करीब पांच हाथ) और बीच में 3.5 मीटर तक होगी। छत दीवार के बाहर आधा से एक मीटर आगे तक निकली होनी चाहिए। गर्मी में बकरियों को इसके नीचे बैठने में सुविधा होती है।

फर्श

बकरी घर का फर्श सीमेंट, ईंट या कंक्रीट का कभी भी नहीं बनाना चाहिए। पक्के फर्श को साफ करने में आसानी तो होती है, परंतु पक्के फर्श पर दिन-रात बकरी को रखने से मेस्टाइटिस या थनैला रोग की शिकायत बढ़ जाती है। बकरी घर का फर्श मिट्टी का होना चाहिए। खास तौर पर नदी के किनारे वाली बलुआ मिट्टी से बनाया गया फर्श सबसे अच्छा होता है। इस मिट्टी पर गिरा पेशाब तुरंत सूख जाता है। बलुआ मिट्टी को हल्का पीट कर बिठा दें और संभव हो तो बाहर की तरफ थोड़ा ढलान रखें, जिससे पेशाब ढलक कर बाहर चला जाए। फर्श कभी भी गीला नहीं रहना चाहिए। फर्श की सफाई पर अत्यधिक ध्यान दें, क्योंकि बकरियों की आधी बीमारी गंदे फर्श की वजह से होती है। हर 15-20 दिनों पर बिना बुझ चूने का फर्श पर छिड़काव करें। प्रत्येक वर्ष बरसात के पहले बकरी-घर के फर्श से 4-6 ईंच मिट्टी काट कर कम्पोस्ट के गड्ढ़े में बाहर फेंक दें और उसकी जगह नई-ताजी बलुआ मिट्टी फिर से भर दें। बरसात में परजीवी किटाणु तेजी से पुरानी मिट्टी में बढ़ने लगते हैं। इसलिए ताजी मिट्टी भर देने से बीमारी का खतरा कम हो जाता है। बकरियों को बरसात की बीमारी से बचाने के लिए मिट्टी बदलना और चूने का छिड़काव बहुत कारगर उपाय है। नवजात शिशु को नरम-मुलायम फूस या भूसे के बिस्तर पर ही रखें। यदि पुआल पर रखते हैं तो सफाई के समय उसे निकाल कर कम्पोस्ट वाले गढ्ढे में फेंक दें और फिर से ताजा पुआल रोज लगा दें । फर्श पर गंदगी, पेशाब, लीद का मतलब है बीमारी को बुलावा यह हमेशा याद रखें ।

बकरी घर का विभाजन

बकरी-घर को फूस या बांस की जाली से चार भागों में बांटना चाहिए। 4 मी० X 10 मी० के एक हिस्से में वयस्क और गाभिन बकरियों, 4 मी० X 3मी० के हिस्से में 15 दिनों से 3 महीनों के मेमने, 4 मी० X 3.5 मी० के दो हिस्सों में 3-9 महीने के नर एवं मादा को अलग-अलग रखना चाहिए। यही

विभाजन बाड़ों पर भी लागू होगा। (चित्र देखें)। अलग-अलग उम्र की बकरियां घर और बाड़े के अंदर अलग-अलग रखी जाएंगी।

हवादार घर

इसका पूरा ध्यान रखें कि बकरी घर के अंदर हवा और रोशनी की कभी भी कमी न हो। वहाँ इतनी हवा होनी चाहिए कि फर्श आसानी से सूख जाए और अंदर की गैस बाहर निकलती रहे। बकरियों के पेशाब में जो अमोनिया होता है, उसे लगातार सूंघ कर उन्हें फेफड़े की बीमारी हो जाती है। इसके लिए पूरब और पश्चिम की दीवारों में छत के पास रोशनदान की जगह खाली छोड़ देना अच्छा रहेगा ताकि गैस ऊपर से बाहर निकलती रहे।

फिर भी हर मौसम में बकरी घर को एक समान खुला नहीं रखा जाता है। बरसात के महीनों में उत्तर-दक्षिण की जाली को पूरा (100 प्रतिशत) खुला रखें, जबकि गर्मी में तीन चौथाई भाग (75 प्रतिशत) और सर्दी में थोड़ा सा (2-10 प्रतिशत) भाग ही खुला रखें। बकरी घर की जाली को ढंकने के लिए तिरपाल, जूट का बोरा, फूस या टाट का उपयोग किया जा सकता है।

तापमान

पूरी गंगा-घाटी की तरह बिहार में भी तापमान 5° सेंटीग्रेड से 45° सेंटीग्रेड के बीच चढ़ता-उतरता रहता है। बकरियों के रख-रखाव के लिए आदर्श तापमान 17° सेंटीग्रेड से 27° सेंटीग्रेड होता है। यानी जितनी सर्दी या गर्मी इंसानों को अच्छी लगती है उतनी ही बकरियों को भी अच्छी लगती है। बकरियों को अत्यधिक सर्दी, गर्मी और नमी से बचाना चाहिए। शरीर को गर्म या ठंडा रखने यानी तापमान अनुकूलन के लिए यदि बकरी अपनी ज्यादा ऊर्जा खर्च करेगी तो वह मोटी कम होगी। इसलिए सर्दी-गर्मी का ख्याल रख कर बकरी की ऊर्जा को बचाना चाहिए, ताकि उसका सारा खाया-पीया, मांस बनने में ही लगे।

कुछ अनुसंधानों के अनुसार जाड़े के महीने में बकरियों को सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक धूप में रखने से उनका वजन बढ़ता है। परंतु उन्हें यदि अधिक सुबह से देर शाम तक बाहर रखा जाय तो इससे वजन घटता है। इसी तरह गर्मी के मौसम में बकरियों को ज्यादा धूप में बाहर रखने से भी वजन घटेगा।

बाड़ा

बकरी घर या शेड से सटा, खुले आसमान के नीचे 1.5 मीटर ऊँची जाली से घेर कर बाड़ा बनाना चाहिए। बाड़े का आकार बकरी घर से दो गुना होता है। यानी यदि बकरी-घर को 20 मी० लंबा और 4 मीटर चौड़ा बनाया है, तो बाड़ा को 20 मी० लंबा और 8मी० चौड़ा बनाएं। इसे पूरब और पश्चिम की तरफ से बांस या लोहे की जाली से घेर देना चाहिए। जाली की ऊँचाई कम से कम डेढ़ मीटर होनी चाहिए और इसके बीच में हर दो मीटर पर बांस या लोहे का खंभा बनाना चाहिए। बाड़ें में खाने के लिए नाद और पानी पिलाने की व्यवस्था भी रखनी चाहिए। जैसा विभाजन बकरी घर के अंदर किया है, उसी तरह बाड़े में भी विभाजन करना चाहिए, ताकि विभिन्न उम्र की बकरियां और मेमने आपस में न मिलें।

विविध-क्षेत्र

बाड़ा से सटे सामने के हिस्से में 20 मी० लंबा और 3 मी० चौड़ा शेड बनना बहुत उपयोगी होता है। इस सामने वाले छप्पर में बीमार घर, प्रसूति घर, भूसा घर, बोतो घर तथा आफिस के लिए व्यवस्था की जा सकती है। यदि जगह की कमी हो तो इस हिस्से का निर्माण छोड़ा भी जा सकता है, पर इससे कई प्रकार की असुविधा होगी। जैसे भूसा यदि पास में नहीं रखा हो तो बार-बार दूर से लाना पड़ेगा। जब कोई बकरी बीमार दिखे उसे तुरंत बाकी बकरियों से दूर अलग कमरे में ले जाना चाहिए, ताकि उसकी बीमारी दूसरों को न लग जाय। इसके लिए पहले ही एक बीमार-घर बना लेना अच्छा रहेगा। इसमें और कुछ नहीं एक साफ सुथरा कोने वाला हिस्सा घेर कर छोड़ देना चाहिए। जिसे वक्त पड़ने पर उपयोग किया जा सके। इसी तरह प्रसूति घर की जरूरत भी पड़ती है। इस कमरे को सीमेंट से पक्का कर लेना चाहिए। क्योंकि बच्चा जनते समय जो द्रव निकलता है, उसे साफ करने में आसानी हो। सीमेंट के फर्श पर पुआल लगा कर बकरी के बच्चे के जन्म की व्यवस्था करनी चाहिए। प्रसूति घर आरामदेह होना चाहिए। प्रसूति घर के एक हिस्से में 1.5 मी० लंबे और 1.5 मी० चौड़े और 1 मी० ऊँचे जाली की तीन चार केबिन बना लेने चाहिए। मेमनों के जन्म से कम से कम एक सप्ताह तक बकरी को उसके मेमने के साथ इसी केबिन में रखना चाहिए। बकरी को सप्ताह-दस दिनों तक खाना यहीं लाकर देना चाहिए क्योंकि बकरी मेमनों को छोड़ कर कहीं नहीं जाएगी। मेमने सिर्फ दूध पी कर रहेंगे।

बकरी-फार्म में मुख्य प्रवेश द्वार सिर्फ एक ही रखना चाहिए ताकि यह पता रहे कि कौन कब आया और गया। प्रवेश द्वार पर दो मीटर लंबा और दो मीटर चौड़ा तथा 6 ईंच गहरा पानी का हौज बनना चाहिए। इसमें पानी भर कर फिनायल, डेटाल या लाल दवाई (पोटाशियम परमैगनेंट) मिला देना चाहिए। यह इंतजाम इसलिए किया जाता है कि बाहर से आने वाली बकरी या आदमी के पांव से हो कर कोई किटाणु फार्म में अंदर न आ जाएं जो कोई भी आए उसका पांव दवाई वाले पानी में धुल कर ही आए। पैर धो कर अंदर आओ!

प्रवेश द्वार पर ही एक आफिस का कमरा बना देना अच्छा होता है, जहाँ बैठने-उठने के अलावे फार्म का रजिस्टर कापी, चूना, दवाई, सुई आदि ठीक से रखा जा सके।

एक किनारे पर बोतो / बीजू बकरों का घर भी बनाना चाहिए। यदि संभव हो तो बोतो को बकरी फार्म से 1/2 कि०मी० दूरी पर कहीं रखना चाहिए। क्योंकि बोतो के शरीर की महक से बकरियां गर्मी (हीट) में आ जाती हैं। कई बार वे ठीक से सो नहीं पातीं, इसलिए उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। यदि उतनी दूर बांधने की व्यवस्था न हो तो वयस्क बकरियों से जितनी दूर हो उन्हें बांधना चाहिए।

कुछ अन्य बातें

बकरी घर के आस-पास जल का जमाव नहीं होना चाहिए। बारिश, आग, बाढ़ या चोरी जैसे खतरों से बचने का इंतजाम पहले से करें। यदि एक से ज्यादा यूनिट लगा रहे हों तो दो बकरी आवासों के बीच कम से कम आठ मीटर का अंतर रखना चाहिए, ताकि हवा का निर्बाध प्रवाह होता रहे। बकरी आवास से सटा बहुत बड़ा पेड़ नहीं होना चाहिए। पेड़ यदि हो तो उसकी ऊँचाई तीन मीटर से ज्यादा न हो। उससे बड़े पेड़ को ऊपर से छाँट सकते हैं। छोटा पेड़ भी तीन-चार मीटर दूर हो तो वही अच्छा है।

उपकरण

बकरियों को चारा, दाना एवं पानी देने के लिए बरतनों की खास ढंग से व्यवस्था करनी चाहिए। क्योंकि बकरियों की आदत होती है वह चारे-दाने में पैर रख कर या लीद कर गंदा कर देती है और फिर उसे नहीं खातीं। इसलिए कुछ ऐसा इंतजाम करना चाहिए कि बकरी चारे में लेंड़ी/ पेशाब नहीं कर सकें।

खाने का ट्रे ऐसा हो कि उस पर वह चढ़ नहीं सके न ही अगला पांव उस पर टिका सके। दूसरी बात यह है कि बकरी मुँह ऊपर करके खाना पसंद करती है, जबकि गाय-भैंस मुँह नीचे करके खाना पसंद करती है। बकरी जमीन पर गिरा हुआ खाना भी नहीं पसंद करती। इसलिए हरी घास को ऊपर लटका कर इसे खिलाना चाहिए। इसके खाने का ट्रे इतना लंबा होना चाहिए कि बकरियों में खाने तक पहुँचने के लिए लड़ाई न हो। प्रति बकरी 25-40 सेंटीमीटर जगह नाद पर हो तो ठीक रहता है। हमारी देशी बकरियों की ऊँचाई 60 से 75 सेंटीमीटर होती है इसलिए 50-55 सेंटीमीटर ऊँचा ट्रे या नाद यदि रखा जाय तो वह इसके सीने तक आएगा। इसलिए 50-55 सेंटीमीटर ऊँचा नाद/ट्रे बनना चाहिए। बच्चों का ट्रे 20-30 सेंटीमीटर ऊँचा बनना चाहिए। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने जो ट्रे विकसित किया है वह अच्छा है पर अभी नए बकरी पालकों को उतना खर्च नहीं करना चाहिए। अभी बांस, मिट्टी, प्लास्टिक, सीमेंट आदि का उपयोग कर सस्ता विकल्प तैयार करना चाहिए। दाना देने के लिए सीमेंट के नाद का उपयोग किया जा सकता है, जबकि सूखा और हरा चारा के लिए बांस की जाली से काम चलाया जा सकता है। लंबा नाद बनाने के लिए 9 ईंच चौड़ाई के प्लास्टिक पाईप को बीचों बीच काट कर नीचे स्टैंड लगाया जा सकता है। जैसे गाय भैंस के लिए लंबा या गोल नाद बनाते हैं वैसा ही यहाँ भी बनना है पर उसके किनारे बांस की जाली लगा कर ऐसा इंतजाम कर दें कि बकरी नाद में घुस नहीं पाए सिर्फ जाली से मुँह घुसा कर खाना खा ले।

पानी पिलाने के लिए सीमेंट का लंबा हौज बनाना चाहिए और उसके अंदर चूना से पोताई कर देना चाहिए। चूना पर जब भी हरी काई दिखाई देने लगे उसे सूखा कर फिर से चूना करना चाहिए। प्रति बकरी हौज की लंबाई 40 सेंटीमीटर होनी चाहिए। यानी 20 बकरियों के लिए 800 सेंटीमीटर लंबाई। यदि 3-4 मीटर लंबा नाद हो तो दोनों तरफ से सभी बकरियाँ एक साथ पानी पी सकती हैं। पानी चापाकल से निकाल कर इसमें भरना चाहिए। तालाब, नदी आदि का पानी बकरियों को कभी न पिलाएं। नाद या हौज की गहराई कम ही रखें ताकि तुरंत खाली हो और फिर से ताजा पानी उसमें भरा जाय। पानी की शुद्धता बकरियों को बीमारियों से बचाने में सहायक होती है।

कम्पोस्ट पिट

बकरी आवास से थोड़ा हट कर एक कोने में बकरियों के लीद को जमा करने की व्यवस्था करें। इसके लिए तीन तरह का इंतजाम किया जा सकता है। पहला सिर्फ गढ्ढा खोद कर उसमें लीद डाल सकते हैं। दूसरा तीन मीटर लंबा, डेढ़ मीटर चौड़ा और आधा मीटर गहरी क्यारी बना कर उसमें लीद को जमा करते जाएं। यह क्यारी ऊँचे स्थान पर बनी होनी चाहिए और क्यारी के एक तरफ से अतिरिक्त पानी बाहर निकलने के लिए नाली बना देना चाहिए। क्यारी लीद से भर जाने के बाद उसे मोटे पालीथीन शीट से ढंक देना चाहिए। तीसरा तरीका ईट का हौज बनना है। 3 मी० X 1.5 मी० X .5 मी० का ईट का जालीदार हौज बनाएँ जिसके नीचे सतह से पानी बाहर निकलने की व्यवस्था हो। यह तीसरा तरीका सबसे अच्छा है पर इसमें खर्चा ज्यादा आता है। ध्यान रखें कि बकरी की लीद में बहुत तरह के परजीवी कीड़े होते हैं, इसलिए इसे बकरी आवास से दूर ही बनाएँ। बकरी लीद से बना कम्पोस्ट या वर्मीपोस्ट/केंचुआ खाद गोबर के मुकाबले महंगा बिकता है। बकरी घर और बाड़े के फर्श से साल में एक बार काटी गई 4 ईच से 6 ईच मिट्टी भी इस कम्पोस्ट के गढ्ढे में डाला जा सकता है। इसके अलावा फर्श पर बिछायी गई पुआल एवं अन्य मलवा भी कम्पोस्ट के गढ्ढे में डाल कर उसे खाद बनाया जा सकता है।

याद रखें

- ऊँची जगह पर 250 से 300 वर्ग मी० जमीन (15 मी० × 20 मी०)।
- बकरी फार्म : तीन हिस्से- बकरी घर (4 × 20), बाड़ा (8×20), विविध (3 × 20)।
- बकरी घर का दूना बाड़ा।
- दिशा : लंबाई में पूरब-पश्चिम।
- दीवारें : पूरब-पश्चिम ईंट; उत्तर-दक्षिण जाली।
- छत : ढलवां, फूस- खपरैल।
- फर्श : बलुआ मिट्टी ।
- घर और बाड़े में बकरियों की उम्र के अनुसार अलग विभाजन ।
- घर हवादार परंतु मौसम के अनुकूल; तापमान 17 डिग्री से 27 डिग्री सेंटीग्रेड
- बाड़ा - 1.5 मी० जाली से घिरा ।
- विविध : बीमार-घर, बोतो-घर, प्रसूति घर, भूसा घर, ऑफिस ।
- उपकरण : खाने की ट्रे/नाद और पानी साफ सुथरा हो ।
- कम्पोस्ट: गढ्ढा दूरी पर कोने में बनाएं ।

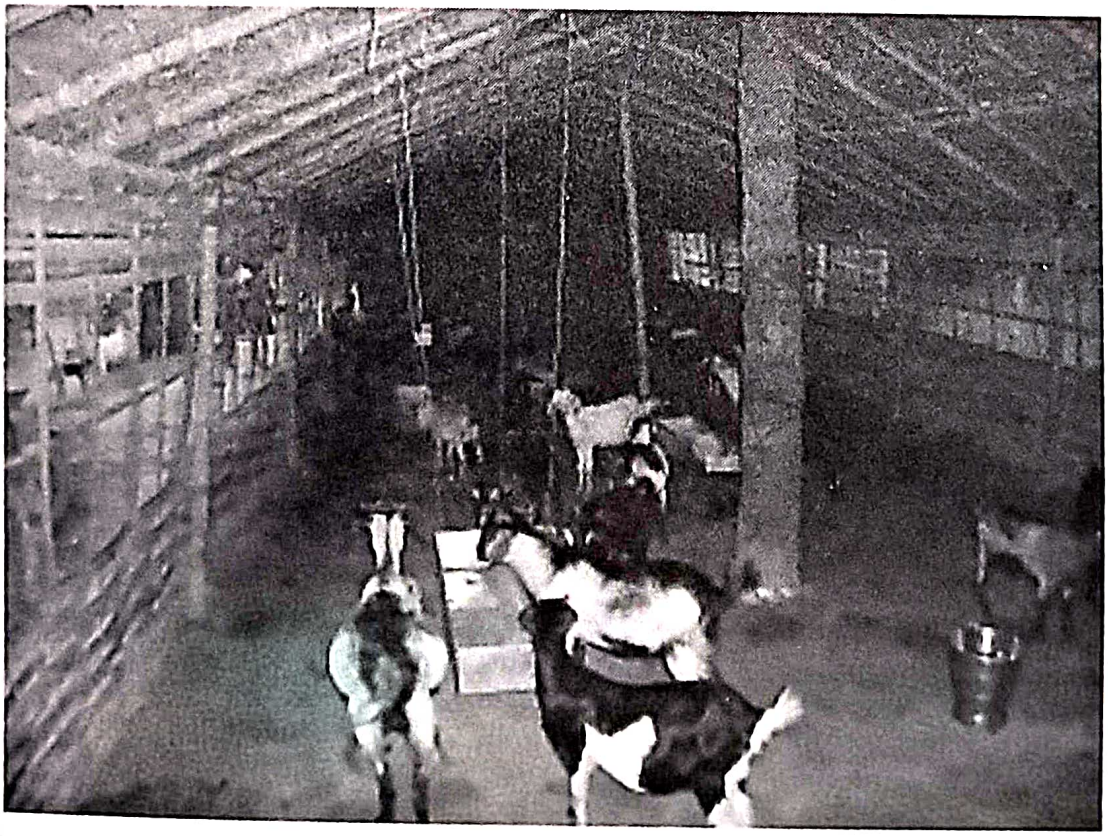

दूसरा कदम : चयन

बकरी घर बन जाने के बाद दूसरा काम है बकरियों की खरीद। कौन सी नस्ल और श्रेणी की बकरियों को खरीदा जाए, यह सवाल अक्सर लोगों को परेशान करता है। कई लोगों ने बिहार में पहले भी बकरी फार्म बनाने की कोशिश की है, पर वे सोचते हैं कि ज्यादा बड़े आकार की और ज्यादा दूध देने वाली बकरियों को पालना ही फायदेमंद होगा। उनके मन में यह सामंती विचार भी रहता है कि यदि बकरी का कारोबार भी करेंगे तो साधारण देसी बकरी का नहीं 'इम्पोर्टेड' विदेशी बकरी का, ताकि लोग बोलें कि भैय्या जी की बकरी भी सांड जैसी दिखती है। पर जब बाहर की बकरी यहाँ आती है, तो यहाँ के जलवायु और बदइंतजामी के कारण जल्द ही मर जाती है और भैय्याजी को भारी घाटा होता है। फिर भैय्याजी सबको कोसते चलते हैं कि यह बड़ा ही खराब बिजनेस है। इसलिए बकरियों का चुनाव करने से पहले कुछ बातों को ठीक से समझ लें।

बकरियों को उपयोगिता के आधार पर तीन श्रेणियों में बांटा गया है: दूध देने वाली, ऊन देने वाली और सिर्फ मांस प्राप्त करने के विचार से पाली जाने वाली बकरियाँ । अभी तक पूरे भारत में कहीं भी दूध के लिए बकरी पालना फायदेमंद साबित नहीं हुआ है। बकरी बहुत दूध देती है तो 2 किलो तक जाती है। दूध केंद्रित नस्ल ज्यादातर पश्चिमोत्तर भारत और रेगिस्तानी इलाके में पाया जाता है। हमारा जलवायु दूध-नस्ल की बकरियों के लिए बहुत अच्छा नहीं है। यही कारण है कि भैय्याजी जो बड़े आकार की बकरियों को खरीद कर लाये थे वह चल नहीं सकीं। ऊन-नस्ल की बकरियाँ बर्फानी इलाकों या ठंडे इलाकों में ही रखना संभव है। इसलिए वह नस्लें भी यहाँ नहीं चलेंगी। हमारे यहाँ मांस प्राप्त करने के लिए पाली जाने वाली छोटे आकार की देसी बकरियों का ही भविष्य उज्जवल है।

दरअसल भारत सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किए जाने के बाद भी अभी तक 80% बकरियों की नस्ल पहचानी ही नहीं गई है। वैज्ञानिकों ने अभी

तक सिर्फ 23 प्रमुख नस्लों को स्थापित किया है। इनमें से कुछ प्रमुख नस्लों के नाम इस प्रकार हैं : कच्छी, गंजाम, गद्दी, मारवाड़ी, ब्लैक बंगाल, कन्नी आड्डू, मालाबारी, संगमनेरी, सिरोही, जखराना, सूरती, उस्मानाबादी, बरबरी, बीटल, जालाबादी, गोहिलाबादी, मेहसाना, चांगथांगी, जमुनापारी आदि-आदि।

आकार के आधार पर बकरियों की इन नस्लों को भी तीन श्रेणियों में बांटा गया है।

बड़ी नस्ल	मध्यम नस्ल	छोटी नस्ल
जमुनापारी	बरबरी	ब्लैक बंगाल
जखराना	मारवाड़ी	देसी नस्लें
बीटल	कच्छी	
सिरोही	संगमनेरी	
	उस्मानावादी	

बड़े आकार की बकरियाँ दूध तो ज्यादा देती हैं पर यदि मांस के हिसाब से देखा जाय तो पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, असम और बंगाल में पाई जाने वाली छोटे आकार की देसी नस्लें ज्यादा मुनाफा देती हैं क्योंकि हमारी देसी बकरियाँ एक बार में कम से कम 2 और यहाँ तक कि 4 से 6 बच्चे भी देती हैं। जबकि बड़ी नस्ल की बकरियाँ नौ से दस महीने में एक से दो बच्चे देती हैं; तो दो साल में बड़ी नस्ल की बकरियाँ जहाँ 3 से 6 बच्चे देती हैं वहीं हमारी देसी बकरियाँ 8 से 16 बच्चे देती हैं। इसलिए बड़ी नस्ल की बकरियों का भार ज्यादा होने के बावजूद मांस की मात्रा देसी के बराबर ही या प्राय: कम ही होती है। हमारी ब्लैक बंगाल/देसी बकरी का मांस कम रेशेदार और स्वादिष्ट भी होता है। अभी हमारी देसी बकरी का 9-10 महीने में वजन 12 किलो के आस-पास होता है। जबकि बड़ी नस्ल की बकरियाँ इस उम्र में 25-30 किलो की हो जाती हैं। पर हमें ऐसा लगता है कि यदि हम देसी बकरियों को थोड़ा ठीक से चारा-दाना दें और उनके शरीर में होने वाले तरह तरह के कीड़ों से उन्हें बचा दें, तो कोई आश्चर्य नहीं कि देसी बकरियों का वजन भी 18-20 किलो तक चला जाएगा। इसलिए बड़ी नस्ल की बकरियों के पीछे भागने के बजाय स्थानीय नस्लों की बकरियाँ पालिए और उन्हें टीकाकरण (वैक्सीन), कीड़ा नाश (डिवर्मिंग) और उचित चारा (प्रॉपर फीड) द्वारा बड़ा बनाने की कोशिश कीजिए।

बकरी खरीदते समय ध्यान रखने की बातें

यदि नींव मजबूत होगा तो मकान भी मजबूत होगा इसलिए बकरियों को खरीदते समय स्वस्थ और अच्छी विशेषताओं वाली बकरियों को खरीदने की कोशिश करें। एक मजबूरी यह है कि अभी बकरी पैदा करने वाले बड़े ब्रीडर फार्म तैयार नहीं हुए हैं। जैसे पोल्ट्री फार्म लगाने के लिए चूजा आसानी से बाजार में एक जगह मिल जाता है, वैसे एक जगह कहीं भी 50-100 बकरियाँ अभी नहीं मिल सकतीं। आपको उसे दो चार की संख्या में आस-पास के गांवों से धीरे-धीरे खरीद कर जमा करना पड़ेगा। आप जैसे लोग जब व्यावसायिक बकरी पालन बड़े पैमाने पर करने लगेंगे तो आगे जाकर एक साथ बड़ी संख्या में बकरियाँ बिकने लगेंगी और उसका पैसा भी ज्यादा मिलेगा। इसलिए जो पहले कारोबार शुरू करेगा उसे फायदा ज्यादा मिलेगा।

हाट-बाजार में जब बकरी खरीदने जाएं तो साधारण कपड़े पहन कर जाएं, नहीं तो किसान आपसे ज्यादा पैसे मांगेगे। कोशिश करें कि कम से कम कीमत में आपको अच्छी बकरियाँ मिलें, जिससे फार्म का लागत मूल्य कम हो। शान बघारने के लिए ऊँची कीमत में बकरियाँ न खरीदें।

उम्र

तीन महीने से छह महीने की बकरियों को खरीदना कीमत और स्वास्थ्य दोनों ही दृष्टियों से अच्छा होता है। छोटी उम्र से ही टीका-दवा देने से बकरियों में बीमारी की संभावना कम रहती है। हालांकि इतनी छोटी उम्र के मेमनों को कोई बेचना नहीं चाहता, इसलिए इन्हें प्राप्त करना कठिन होता है। ऐसी स्थिति में 1 से 3 साल की उम्र की बकरियों को खरीदें। वैसे 7 से 10 साल की उम्र तक बकरियाँ बच्चे देती रहती हैं। और इनकी उम्र 12-14 साल तक जाती है। आस-पास के गांवों में बकरियों की जासूसी करवाएं और जहाँ अच्छी बकरियों का पता चले, उन्हें थोड़ा ज्यादा पैसा दे कर भी खरीद लें।

कैसी बकरियों की खोज करें

ऐसी बकरियों को खरीदने का प्रयास करें जिसने चार-छह मेमने एक साथ पैदा किए हुए हों या जो चार-छह मेमने एक साथ पैदा हुए हों उनमें से किसी को खरीदें। यदि इनमें से एक को खरीदना हो तो जिसका जन्म सबसे पहले हुआ हो, उसे खरीदें, वह सबसे सचेष्ट होगा। ऐसी बकरी बिल्कुल न खरीदें जो

एक-दो मेमने ही देती हों। इसके साथ ही ऐसी बकरियों को खरीदने पर जोर दें जो औसत से ज्यादा दूध देती हों।

यहाँ एक बात ध्यान रखने की है कि एक-दो मेमने वाले समूह ज्यादा स्वस्थ्य और फुर्तीले दिखते हैं। जबकि चार-छह के समूह में पैदा हुए मेमने कमजोर दिखाई देते हैं। परंतु इन कमजोर मेमनों को ऊपर से दूध और भोजन देकर स्वस्थ बनाना चाहिए, क्योंकि इनके अनुवांशिक गुण महत्वपूर्ण होते हैं।

इसलिए कमजोर दिखने वाले चार-छह मेमनों के समूह की खरीद एक दो मेमनों वाले तगड़े समूह की खरीद से बेहतर है। दरअसल इसकी संभावना ज्यादा होती है कि चार-छः मेमनो वाले समूह में अनुवांशिक विशेषताओं के कारण आगे भी चार-छह मेमने ही पैदा होंगे। इसलिए फार्म बनाने के लिए बकरियों का चयन करते हुए इस मुद्दे पर सबसे ज्यादा ध्यान दें। ऐसी बकरियों की खरीद पर सबसे ज्यादा ध्यान दें। ऐसी बकरियों की खरीद से आपका मुनाफा कई गुणा बढ़ सकता है। इसके विपरीत एक ही मेमना देने वाली बकरियों को तुरंत फार्म से बाहर कर दें।

कभी भी बीमार बकरियाँ न खरीदें। खास तौर पर ध्यान दें कि कहीं चलते समय बकरी लंगड़ाती तो नहीं है। पर सामान्यतः हर किसान कोशिश करता है कि वह अपनी बीमार बकरी जल्दी बेच दे और अच्छा माल अपने पास रखे। यही कारण है कि लोग जब हरियाणा, पंजाब और राजस्थान से बकरियाँ खरीद कर लाते हैं, तो उनमें से ज्यादातर आते आते ही मर जाती हैं।

उन्नत शारीरिक विशेषताएं

स्वस्थ बकरी और मेमनों की सबसे बड़ी पहचान है उनके बालों की चमक। बीमार बकरियों की खाल में चमक नहीं होती। दूसरी पहचान है कि स्वस्थ मेमने तेज तर्रार और फुर्तीले होते हैं तथा नए आदमी को देख कर तुरंत भागने की कोशिश करते हैं। सर्तकता और सचेष्टता अच्छी विशेषता मानी जाती है। उम्र के हिसाब से बड़े आकार का होना भी स्वास्थ्य की निशानी है। स्वस्थ बकरियों और मेमनों के लक्षण जानने के लिए देखें छठा कदम : स्वास्थ्य प्रबंध।

उम्र पहचानने के लिए दांतों की गिनती की जा सकती है। तीन महीने की उम्र में आठ दूध के दांत आ जाते हैं और उसके बाद एक साल में दो स्थाई दांत, दो साल में चार, तीन साल में छः और चार साल में आठ स्थाई दांत मौजूद होते हैं। अतः दाँतों को देख कर उम्र का अंदाजा लगाया जा सकता है।

बीजू बकरों का चुनाव

आमतौर पर सबसे घटिया स्वास्थ्य वाले मेमनों को बोतो/बीजू बकरा बनने के लिए गांव-बाजार में छोड़ दिया जाता है। हमें इसे बदलना होगा। सबसे अच्छे, सचेष्ट, फुर्तीले और सर्वश्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाले नरों को ही प्रजनन के लिए तैयार करना चाहिए। इसी से बकरियों की नस्लें सुधरेंगी।

बीजू बकरों का चुनाव करते समय यह ध्यान रखें कि उसकी उम्र ज्यादा न हो। डेढ़ से तीन साल की उम्र बीजू बकरों के लिए आदर्श माना जाता है। बीजू बकरों को चुस्त फुर्तीला और निरोग होना चाहिए। इसका खास तौर पर ध्यान रखें कि इनके अंडकोषों में कोई सूजन या विकार न हो तथा दोनों अंडकोष बराबर आकार के हों-एक छोटा और दूसरा बड़ा नहीं होना चाहिए।

छंटनी

यदि बकरी की उम्र सात-आठ वर्ष और बीजू बकरे की तीन-पाँच वर्ष से ऊपर हो गयी हो तो उसे अपने फार्म से निकाल दें। इसी तरह बीमार बकरियों पर भी दवाई में ज्यादा पैसा खर्च करने से अच्छा होगा कि उन्हें आप फार्म से बाहर कर दें। यदि आपके फार्म पर सिर्फ एक ही बीजू बकरा है तो एक साल में उसे फार्म से बाहर कर दें, क्योंकि इससे ज्यादा रखने पर 'इनब्रिडिंग' यानी अपने परिवार के अंदर ही प्रजनन की आशंका बन जाएगी, जो बकरियों के नस्ल सुधार एवं स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होगा। अपने बीजू बकरे को पड़ोसी के बकरे से अदला-बदली कर लें। वैसे यदि आपके पास एक से ज्यादा बीजू बकरे अपने फार्म में हैं तो उन्हें आपस में बदल कर काम चला सकते हैं।

याद रखें

- अपने इलाके में पाई जाने वाली देसी बकरियाँ ही खरीदें।
- बाहर से मंगाई गई दूसरी नस्ल की बकरियाँ महंगी और लाभहीन साबित हो सकती हैं।
- लंगड़ी-बीमार बकरियाँ न खरीदें।
- एक से तीन साल की स्वस्थ्य बकरियाँ खरीदें।
- उम्र के हिसाब से ज्यादा वजन वाली बकरियाँ खरीदें।
- चार-छः मेमने देने वाली और ज्यादा दूध देने वाली बकरियाँ खरीदें।
- डेढ़ से तीन वर्ष के स्वस्थ्य बीजू बकरों का चयन करें, जिसके अंडकोष विकारहीन हों।

तीसरा कदम : आहार

अन्य सभी जीवों की तरह बकरियों को भी प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, विटामिंस, खनिज लवण तथा जल जैसे पोषक तत्वों की जरूरत होती है। ये पोषक तत्व उसे मुख्यत: तीन रूप में दिया जाता है: सूखा चारा, हरा चारा और दाना। एक बकरी कुल मिलाकर अपने वजन का 10 प्रतिशत भार के बराबर का चारा खा लेती है। यानी 20 किलो की बकरी को कुल मिलाकर दिन भर में 2 किलो चारा और 4 लीटर पानी चाहिए। इस दो किलो के अंदर एक से सवा किलो हरा चारा, 500-600 ग्राम सूखा चारा तथा 150-250 ग्राम दाना देना चाहिए। इसमें दाना सबसे महंगा पड़ता है इसलिए इसके खर्चे पर थोड़ा नियंत्रण रखना चाहिए। यद्यपि पैसे कम पड़ रहे हों तो अन्य बकरियों को दाना सप्ताह में दो-तीन बार मात्र देकर भी काम चलाया जा सकता है। गर्भवती और मेमनों को दूध पिलाने वाली बकरियों को दाना अवश्य देना चाहिए। यदि अपने खेत और घर में उपलब्ध फसल का दाना आसानी और कम कीमत में मिल जाए तो 200 ग्रम प्रतिदिन दाना दे दें, यदि नहीं तो खरीद कर ज्यादा दाना नहीं खिलाएं। इससे मुनाफे पर भारी असर पड़ेगा। हमें लागत और आमदनी के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के अनुसार
बकरी आहार की आदर्श मात्रा
चार्ट - 3.1 : मेमनों का आहार (ग्राम में),

उम्र/दिनों में	दूध	हरा चारा	दाना
0-7	250	--	--
8-30	200-350	इच्छानुसार	इच्छानुसार
31-60	300-400	"	"
61-90	200	"	100-150

चार्ट-3.2 : बकरियों के भोजन की आदर्श मात्रा

उम्र/माह	दाना	हरा चारा	सूखा चारा
3	150	300	इच्छानुसार (करीब हरे चारे का आधा)
4	200	400	"
5	225	500	"
6	250	600	"
7	275	700	"
8	300	800	"
9	300	900	"
10	300	1000	"
11	300	1100	"
12	300	1200	"

चार्ट : 3.3 गर्भवती बकरियों का आहार सघन पद्धति में

आहार	0-2 माह	2-3.5 माह	3.5-5 माह
दाना मिश्रण	200 ग्रा०	300 ग्रा०	400 ग्रा०
भूसा	400 ग्रा०	400 ग्रा०	500 ग्रा०
हरा चारा	1000 ग्रा०	1000 ग्रा०	1200 ग्रा०
कुल आहार	1600 ग्रा०	1700 ग्रा०	2100 ग्रा०

चार्ट 3.4 : अर्ध सघन पद्धति में

आहार	0-2 माह	2-3.5 माह	3.5-5 ग्राम
दाना	200 ग्रा०	250 ग्रा०	300 ग्रा०
भूसा	300 ग्रा०	400 ग्रा०	500 ग्रा०
हरा चारा	5-6 घंटे की चराई		

आमतौर पर बकरियों के खाने के दो समय होते हैं। पहला सूर्योदय से लेकर करीब 10 बजे दिन तक और दूसरा अंधेरा होने से पहले तीन घंटे यानी करीब 3 बजे से 6 बजे तक। जब ज्यादा गर्मी पड़ती है तो बकरी रात में ही

चारा खाना शुरू कर देती है। इसलिए सूखा चारा बकरियों के बाड़े में हमेशा मौजूद रहना चाहिए-चाहे वे खाएं या न खांए। हरा चारा दोपहर में देना सुविधाजनक रहेगा। दाना यदि पूरा खुराक (300 ग्राम) देते हैं तो आधा-आधा बांट कर सुबह-शाम दे दीजिए। यदि दाना का आधा खुराक ही देते हैं तो शाम को दीजिए। सुबह को जब बकरियों को भूख लगी होती है तो सूखा चारा भी खा लेती है। शाम को पेट भरा होने पर वे सूखा चारा नहीं खाएंगी। इसलिए सुबह में सूखा चारा, दिन में हरा चारा और शाम को दाना यह क्रम ठीक रहता है।

सूखा चारा

चना, अरहर, मूंग, मसूर तथा अन्य प्रकार की दालों का भूसा-डंठल बकरियों के लिए सबसे अच्छा सूखा चारा होता है। हरी घास को सुखा कर रख लें, यह भी एक अच्छा सूखा चारा का काम करता है। आपके गांव में जो दाल ज्यादा उगती हो उसी का डंठल भूसा बकरी को खाने की आदत लगाएं। बकरी पालन से मुनाफा कमाने का एक सबसे बड़ा गुर यह है कि खाने पर खर्चा कम से कम हो। सारा का सारा सामान खरीद कर खिलाएंगे तो मुनाफा कम हो जाएगा। बकरी आमतौर पर गेहूँ का भूसा और पुआल पसंद नहीं करती है। पर कुछ किसानों का कहना है कि वे गेहूँ के भूसे में दाना-पानी मिला कर 'सानी' तैयार करके जैसे गाय-बैल को देते हैं वैसे ही बकरी को भी दे देते हैं और वह खा लेती है। इसे अपने यहाँ आप आजमा कर देख सकते हैं। परंतु सिर्फ गेहूँ का भूसा खिलाने से बकरी कमजोर और बीमार हो जाती है । अन्य नई चीजों को खाने की आदत भी धीरे-धीरे लगाएं।

हरा चारा

हरा चारा के रूप में पेड़ों की पत्तियाँ जैसे आम, पीपल, बरगद, पाकड़, कटहल, नीम, गूलर, शहतूत, जिलेवी आदि की पत्तियाँ दी जा सकती हैं। परंतु यदि आप बड़े पैमाने पर बकरी-फार्म चलाएंगे तो इतने पेड़ों की पत्तियाँ आप रोज नहीं दे सकते हैं। इसलिए आपको हरे चारे की खेती करनी पड़ेगी। हरे चारे के लिए मक्का, ज्वार, बाजरा, रिजका, बरसीम आदि की खेती सबसे अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त कई प्रकार की घासों के बीज मिलते हैं जैसे पैरा, अंजन, रोडस, घबलू, बरमुडा, आचर्ड, ब्लूपैनिक, गिनी, नैपियर दीनानाथ, सूडान, स्टाइलों आदि बकरियों के लिए उपयुक्त घास हैं, जिनकी खेती की जा सकती है।

गुणवत्ता के आधार पर चारे की तीन श्रेणीयाँ मानी जाती है।

1. **प्रथम श्रेणी :** बरसीम, रिजका, लोबिया, मक्का, ग्वार, सनई, जौ, जई आदि का सूखा या हरा चारा।
2. **द्वितीय श्रेणी :** बाजरा, नेपियर, वृक्षों की पत्तियाँ, अंजन घास, झरबेरी, चना, तथा अरहर का भूसा।
3. **तृतीय श्रेणी :** चावल, गेहूँ, जौ का भूसा।

चारा उत्पादन

बकरी-फार्म चलाने में एक बड़ी समस्या सालों भर हरा चारा की व्यवस्था बनाए रखना है। एक यूनिट पर प्रतिदिन करीब 40-50 कि०ग्रा० हरा चारा चाहिए। महीने में 12-13 क्विंटल यानी साल भर में करीब 150 क्विंटल चारे की व्यवस्था होनी चाहिए। इसके लिए एक फसल चक्र बनाना होगा और सिंचित भूमि की व्यवस्था करनी होगी। इतना चारा उगाने के लिए आपको कितना खेत चाहिए यह आपके खेत के उपजाऊपन और सिंचाई की सुविधा पर निर्भर करेगा। परंतु मोटा-मोटी डेढ़-दो बीघा खेत से इतना चारा मिल जाना चाहिए। इस फसल चक्र में महीने के हिसाब से लगातार हरा चारा मिले इसके लिए इस प्रकार व्यवस्था करनी चाहिए।

चार्ट : 3.5

जनवरी, फरवरी, मार्च	-	बरसीम, रिजका, जई
अप्रैल, मई, जून	-	लोबिया, रिजका, मक्का
जुलाई से दिसंबर	-	ग्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा

मोटे तौर पर अप्रैल से दिसंबर तक मक्का रहेगा ही। दिसंबर से मार्च के लिए बरसीम और रिजका आदि किसी चारे की व्यवस्था कर लें। मक्का और ज्वार के साथ यदि आप लोबिया लगा देते हैं तो दोनों फसल एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचातीं।

हरे चारे के लिए दलहन, अनाज और घास इन तीन तरह की पैदावार की जा सकती है। दलहन में ग्वार, लोबिया, बरसीम और रिजका; अनाज में मक्का, ज्वार, बाजरा, मकचरी, और जई; तथा घासों में दीनानाथ, नेपियर, पैरा, गिनी और अंजन प्रमुख चारा स्रोत हो सकते हैं।

मक्का को मार्च से अक्टूबर तक करीब करीब तीन मौसमों में बोया जा सकता है। मक्का का चारा पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होने के कारण पशुओं को बहुत पसंद आते हैं। इसमें प्रोटीन 7-10 % होता है, इसलिए यह ज्वार और बाजरा दोनों से अधिक पौष्टिक माना जाता है। मक्का के चारा की पैदावार 350-400 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

ज्वार एक अच्छा चारा है जिसमें प्रोटीन 5 प्रतिशत के करीब होता है। इसे मार्च, जून एवं अक्टूबर में बोया जा सकता है। इसकी कटाई तीन महीने बाद ही की जाती है क्योंकि 60 दिन से पहले इसमें एक जहर मौजूद रहता है, जिसे खाकर पशु मर सकते हैं। इसकी बहुकाटी/मल्टीकट प्रजाति ही उगानी चाहिए। जहाँ साधारण प्रजाति से 300-400 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की पैदावार मिलती है वहीं इस प्रजाति से 650-700 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक चारा मिल जाता है।

मकचरी करीब-करीब मक्के जैसी दिखाई देने वाली एक ऐसी फसल है जो निचली भूमि, बाढ़ या कुछ समय तक जलमग्न रहने वाले इलाकों के लिए उपयुक्त है। इसका चारा मक्का से थोड़ा बेहतर होता है क्योंकि इसमें प्रोटीन 12 प्रतिशत तक पाया जाता है। इसकी बुवाई मार्च-जुलाई के दौरान होती है। मार्च में बुवाई कर देने पर तीन कटाई मिल सकता है। पहली कटाई 70 दिनों बाद लेना चाहिए। मार्च में बुवाई से 500-600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर चारा प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन बरसात में बुवाई से फसल कम हो जाती है।

जई एक रबी फसल है जिसकी बुवाई अक्टूबर-जनवरी के बीच की जा सकती है। इसमें 10-12 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसका साइलेज (अचार) और 'हे' (सूखी घास) बनाने के लिए उपयोग सबसे अच्छा होता है। इसकी पैदावार 400-450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो जाती है।

दलहनी फसलों में कम सिंचाई वाले शुष्क क्षेत्रों के लिए **ग्वार** बहुत महत्वपूर्ण फसल हो सकता है। इसमें 18 प्रतिशत प्रोटीन होता है और इसे जल्दी काटने पर पौष्टिक और सुपाच्य चारा प्राप्त होता है। इसे ज्यादातर खरीफ फसल के रूप में उगाया जाता है और इससे प्रति हेक्टेयर 300-250 क्विंटल हरा चारा प्राप्त हो सकता है।

लोबिया ज्यादा सिंचित और वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए अच्छी चारा फसल है। इसे मार्च-सितंबर के दौरान बोया जा सकता है और दो-ढाई महीने में यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसमें प्रोटीन 17-18 प्रतिशत तक होता है। इससे 300-350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से चारा प्राप्त किया जा सकता

है। इसे ज्वार और बाजरा के साथ मिश्रित करके भी बोया जा सकता है।

बरसीम रबी के रूप में उगाए जाने वाले चारे के फसलों में सर्वोत्तम है, परंतु इसके लिए सिंचाई की व्यवस्था रखना आवश्यक है। इसकी बुआई अक्टूबर-नवम्बर में की जाती है और 50 दिनों बाद पहली कटाई की जा सकती है। प्रत्येक 15-20 दिनों पर इसमें सिंचाई करनी चाहिए। इसमें प्रोटीन की मात्रा 21 प्रतिशत तक होती है। इसकी 5-6 कटाई ली जा सकती है जिससे प्रति हेक्टेयर 600-700 क्विंटल चारा प्राप्त हो सकता है।

घास की पैदावार को भी हरे चारे का एक प्रमुख स्रोत बनाया जा सकता है। अधिक नमी और पानी वाले निचले इलाकों में **पैरा** घास बहुत अच्छी मानी जाती है। यह कई सालों तक फसल देने वाली घास है जिसकी बुवाई बरसात के मौसम में या जून-जुलाई के दौरान करनी चाहिए। इस घास की दो-तीन जड़ों को 30 सें० मी० की दूरी पर एक लाइन में लगा कर रोपना चाहिए। पहली कटाई तीन-साढ़े तीन महीने बाद और फिर एक महीने के अंतर पर करना चाहिए। यह घास खाद-पानी डालने पर प्रति हेक्टेयर 500-1000 क्विंटल तक चारा दे सकती है।

दीनानाथ एक सालाना घास है जिसके बीजों की बुवाई जून-जुलाई के महीने में की जाती है। इसके बीजों को अधिक गहराई में न डालें। थोड़ा ऊपर ही रख कर प्रति हेक्टेयर 10-12 किलो बीज कतारों में हल के पीछे-पीछे डालते जाएं। पहली कटाई 70-80 दिनों बाद करनी चाहिए। इससे 700-1000 क्विंटल हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो सकता है।

गिनी घास कई सालों तक फसल देने वाली घास है, जिसकी 10,000 जड़ें प्रति हेक्टेयर मार्च-अगस्त के दौरान बोयी जा सकती है। पहली कटाई 3-4 महीने बाद करनी चाहिए, पर इसकी खूबी यह है कि ज्यादा बार काटने से और ज्यादा बढ़ती है। इस घास की औसत पैदावार 1200-1500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की जा सकती है।

नेपियर भी कई सालों तक चारा प्रदान करने वाली घास है और सालों भर यह हरा चारा उपलब्ध करा सकती है। इसमें 7-12 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है परंतु इसे लगातार खिलाने से पशुओं में कैल्शियम की कमी हो जाती है। इसकी जड़ें मार्च-अगस्त के महीने में लगाई जा सकती हैं। प्रति हेक्टेयर 15,000 जड़ें कतार में लगानी चाहिए। बुवाई के 80 दिनों बाद पहली कटाई और फिर हरेक 40 दिनों पर कटाई ली जा सकती है।

अंजन घास में न केवल 11 प्रतिशत तक प्रोटीन बल्कि पर्याप्त मात्रा में फास्फोरस और कैल्शियम भी पाया जाता है। इसे सिंचित और शुष्क दोनों तरह के इलाकों में उगाया जा सकता है। यह बरसात में बोयी जाने वाली तथा कई सालों तक चलने वाली घास है। पहली कटाई 90-100 दिनों बाद लेनी चाहिए और साल में तीन कटाई ली जा सकती है। सिंचित क्षेत्रों में यह 400-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरा चारा दे सकती है।

सभी घासों की कटाई 20 सेंटीमीटर यानी बित्ता-सवा बित्ता ठूँठ छोड़ कर ही करनी चाहिए। जड़ सटा कर घास की कटाई कभी न करें। प्रत्येक कटाई के बाद नाइट्रोजन खाद और सिंचाई का प्रबंध करने से फसल जल्दी बढ़ती है। इन घासों के अलावा स्टाइलो, वनकुल्थी, सेवन, तितली मटर, सेम, लुर्सन, सूडान, सैंजी, बहिया, रोडास, आदि घासों और चारों की खेती भी लाभदायक हो सकती है।

चार्ट 3.6- चारा उत्पादन चक्र और मात्रा

फसल	बीज दर (किलो हेक्टेयर)	बुवाई का समय (माह)	पहली कटाई का समय (दिनों बाद)	उत्पादन मात्रा (क्विंटल प्रति हेक्टेयर)
मक्का	40-50			
	60-75 (संकर)	मार्च- अक्टूबर	60-65	350.450
ज्वार	40-50	मार्च-अगस्त	60	300-400
बाजरा	10-12	मार्च-अगस्त	60	300-400
मकचरी	30-40	मार्च-अप्रैल	70	500-600
जई	80-90	अक्टूबर-दिसंबर	60	400-500
ग्वार	25-30	अप्रैल-अगस्त	75	250-300
लोबिया	30-40	मार्च-सितंबर	60-70	300-400
बरसीम	20-25	सितंबर-अक्टूबर	60	700-800
रिजका	-	सितंबर-अक्टूबर	60	800-900
पैरा घास	28,000 जड़े/हे०	जून-जुलाई	70	500-1000
दीनानाथ	10-12	जून-जुलाई	70 दिनों बाद	700-1000
गिनी	10,000 जड़ें/हे०	मार्च-अगस्त	100-120	750-1200
नैपियर	15,000 जड़ें/हे०	फरवरी-नवंबर	85 दिनों बाद	700-900
अंजन	5-8	जून-जुलाई	90 दिनों बाद	350-400

दाना

बकरियों के आहार का तीसरा हिस्सा दाना या रातिब होता है, जिसे कई प्रकार के अनाज, खली, चोकर और मिनरल मिक्सचर मिला कर बनाया जा सकता है। माप की सुविधा के लिए 100 किलो-दाना एक बार बना कर रख लें और उसमें से थोड़ा-थोड़ा (150-300 ग्राम) पशुओं को खिलाते रहें। नीचे मेमनों और वयस्कों के लिए दाना बनाने की अलग अलग विधियाँ दी गई हैं।

चार्ट : 3.7 : मेमनों के लिए दाना (100 किलो)

सामान	प्रथम विधि	द्वितीय विधि	तृतीय विधि
मक्का	--	47	15
जौ का दाना	20	--	--
जई	20	--	--
बाजरा	--	--	10
तिल की खली	15	--	--
तीसी की खली	15	--	10
चने की चुन्नी	15	--	15
गेहूँ का चोकर	12	20	17
मूंगफली की खली	--	30	10
अरहर की चुन्नी	--	--	10
खनिज मिश्रण (मिनरल मिक्सचर)	2	1.5	2
साधारण नमक	1	1.5	1
	100	100	100

चार्ट : 3.8 वयस्क बकरियों का दाना (100 किलो)

सामान	प्रथम विधि	द्वितीय विधि
जौ/मक्का/बाजरा	32	40
बिनौला/मूंगफली/तीसी/तिल/सूरजमुखी की खली (सरसों की खली नहीं दें)	30	30
गेहूँ का चोकर/चावल का पालिस	20	27
दालों की चुन्नी	15	--
मिनरल मिक्सचर (पशु दवाई दुकानों में मिलती है।)	1.5	1.5
साधारण नमक	1.5	1.5
	100	100

इन दानों का निर्माण अपने अपने इलाके में उपलब्ध सस्ते सामान के अनुरूप ही करें।

पानी

बाड़े में हमेशा साफ पानी उपलब्ध रहना चाहिए और बकरियों को कम से कम तीन बार साफ पानी अवश्य पिलाएं। उन्हें तालाब या बारिश का पानी कभी नहीं पिलाएं। हौज की सफाई का पूरा ध्यान रखें और जहाँ तक हो सके चापाकल का साफ पानी ही बकरियों को पिलाएं।

आहार में ध्यान रखने की बातें

पहली बात बरसात में हरा चारा की मात्रा कम कर दें, इससे बकरियों को डायरिया या पेट खराब होता है। बरसात के दौरान हरा चारा आधा कर दें और सूखा चारा बढ़ा दें। दूसरी बात आहार पद्यति में अचानक परिवर्तन नहीं करें। यदि आहार सामग्री बदलनी है तो धीरे-धीरे परिवर्तन करें। तीसरी बात, फफूंद लगा चारा या घास या सड़ी हुई भोजन सामग्री आदि बकरियों को नहीं खिलाएं। आलू के खेत में बचा हुआ आलू खाने के लिए बकरियों को न छोड़ें। इससे एसिडीटी बढ़ती है और अफरा की बीमारी हो जाती है। कुछ हरे पेड़ों की पत्तियां भी जैसे रेमजा और सहजन आदि बकरियों के लिए हानिकारक होता है। चौथी बात, दाना थोड़ा-थोड़ा करके दें ताकि वह बरबाद न हो- यह सबसे

महंगा सामान होता है। यह भी ध्यान रखें कि ज्यादा दाना खिलाने से पशुओं को एसिडीटी/अफरा तथा फड़किया (एंट्रोटॉक्सेमिया) का रोग भी हो सकता है। ज्यादा प्रोटीन खिलाने से खुर भी ज्यादा बढ़ते हैं, जिसे लगातार काटना पड़ता है। पांचवीं बात, जो बकरी अभी दूध न दे रही हो, या गाभिन भी नहीं हो या जो मेमना नौ महीने से ऊपर हो गया हो उसे दाना बिलकुल कम या बंद कर देते हैं। उसे सिर्फ 'मेंटेनेंस डायट' या जीवित रखने के लिए खाना देते हैं। नौ महीने के बाद ज्यादा खाना देने पर भी मेमने का विकास कम होता है। इसलिए मुनाफे में कमी आ जाती है। आखिरी बात, बीजू बकरे/बोतो/प्रजनक बकरे का भोजन भी गर्भवती बकरियों के जैसा ही होना चाहिए।

चौथा कदम : फार्म प्रबंध

जब लोग दो चार बकरियाँ रखते हैं तो उन्हें संभालना आसान होता है, परंतु जब आप सौ-हजार बकरियों का रेवड़ रखेंगे तो उनकी देखभाल के लिए खास तरह से इंतजाम करना पड़ेगा, इसी को फार्म-प्रबंध या फार्म मैनेजमेंट कहते हैं। यह एक जटिल काम है जिसे नियमित रूप से करना चाहिए। फार्म से संबंधित काम दो तरह के होते हैं।

(1) रोजाना काम (2) सामयिक काम

रोज-रोज के काम इस प्रकार हैं : -

- दूध निकालना/पिलाना
- बाड़े की सफाई
- उपकरणों की सफाई
- चारा-पानी देना
- हीट या बकरी में गर्मी की जांच
- बकरियों के स्वास्थ्य की जांच
- रजिस्टर में बातों को दर्ज करना और हिसाब लिखना

सामयिक कार्य

- प्रसव के समय जच्चा-बच्चा की देखभाल
- खुर काटना
- अनावश्यक बाल काटना और बालों में ब्रश चलाना
- वजन लेना-मेमनों का 15 दिनों पर (खाली पेट); वयस्कों का 30 दिनों पर
- पहचान चिन्ह लगाना - टैगिंग
- बधियाकरण
- टीकाकरण
- परजीवी बचाव
- मौसम के अनुरूप आवास में परिवर्तन करना।

रोज किए जाने वाले कार्यों में सुबह उठ कर सबसे पहले स्वयं एक बार बकरी घर का चक्कर लगाएं और इस बात पर गौर करें कि कोई बकरी बीमार तो नजर नहीं आती। फिर अपने सामने बाड़ा और नाद-बर्तन आदि सब साफ करवाएं। बकरियों के बच्चों को लाकर दूध पिलाएं और फिर उन्हें अलग-अलग बंद करें। शाम के समय दिन भर के खर्चे का हिसाब तथा अन्य प्रकार के फार्म रजिस्टर भर लें। सफाई के लिए लाल दवाई यानी पोटाशियम परमैगनेट का उपयोग करें। हीट की जांच एवं जानकारी के लिए अगला अध्याय : प्रजनन प्रबंध देखें।

समयानुसार कार्य

1. खुर काटना : जो बकरियाँ बाहर चारागाह में चरने नहीं जातीं और प्रोटीन-दाना आदि खाती हैं, उनका खुर जल्दी बढ़ जाता है। उन्हें यदि काटा न जाय तो बकरियों में लंगड़ापन आ जाता है। बकरियों को अच्छी तरह लिटा कर बढ़े हुए खुरों को तेज धारदार चाकू से काटना चाहिए। खुरों को वहीं तक काटना चाहिए जहाँ तक लाल रंग न दिखने लगे। कटे खुर पर तारपीन का तेल लगा देना चाहिए। खुर ज्यादा कटने पर भी लंगड़ापन आ जाता है। यह काम साल में दो से तीन बार ही करना चाहिए। नए बकरी पालकों के लिए अच्छा यह होगा कि यह काम बैल का नाल ठोकने वाले कारीगर से करवाएं, स्वयं न करें। धीरे-धीरे देखके वे इसे सीख लें और तभी स्वयं खुर काटने की कोशिश करें। इसके लिए पहले बाहरी किनारों को तराशें, फिर अंदर गहरा तराशें। इसे काटने के लिए सरौता जैसा और हंसिया जैसा दो प्रकार के उपकरण मिलते हैं। इसे हूफ-कटर कहते हैं और यह पशुचिकित्सा का सामान रखने वाली दुकानों से प्राप्त किया जा सकता है।

2. सींग रहित करना : मेमने आपसी लड़ाई में एक दूसरे को सींग से घायल कर देते हैं। इससे बचने के लिए कई किसान मेमनों को सींग रहित कर देते हैं। इस के लिए जन्म के 15-20 दिनों के अंदर सींग निकलने वाली जगह से बाल काट कर गर्म लोहे की छड़ से अंकुरित सींग की ऊपरी सतह पर तब तक रखते हैं जब तक कि वह सुनहरे कत्थई रंग का न हो जाय। इसमें 10-20 सेकेंड से ज्यादा समय नहीं लगता।

3. ब्रसिंग : कड़े बाल वाले ब्रश (जिससे कोट आदि भी झाड़ते हैं) से समय-समय पर बकरी के बालों की सफाई करनी चाहिए। इससे टूटे हुए बाल और कीड़े-मकोड़े बाहर निकल जाते हैं। बकरी के बालों में चमक आ जाती

है। रक्त संचार बढ़ता है और बकरी स्वस्थ होती है। ब्रश को हमेशा मुँह से पीठ की तरफ चलाना चाहिए। जहाँ बाल ज्यादा हो उसे कैंची से काट देना चाहिए। बोतो/बीजू बकरे के भी बड़े बालों को काट देना चाहिए। सफाई से बोतों से आने वाली दुर्गंध काफी हद तक कम हो जाती है। बालों में ब्रश चलाने और मालिश से बकरियों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

4. बधियाकरण : खस्सी बनाने की ***तीन विधियाँ*** प्रचलित हैं और गांवों में इस काम को करने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं। आप भी उनसे सीख कर स्वयं यह काम कर सकते हैं। यह कार्य 15-30 दिनों की उम्र में किया जाना चाहिए।

(क) बोर्डियो विधि: इसमें सरौते जैसे एक यंत्र से शुक्राणु वाहक नलिकाओं को दबा दिया जाता है। पहले साफ जगह पर मेमने को लिटा कर अंडकोष को थोड़ा बाहर की तरफ खींच लेते हैं और अंडकोष की नस को इस यंत्र से दबा देते हैं। घाव पर स्प्रिट या टिंचर-आयोडीन का घोल लगा देते हैं।

(ख) रबर छल्ला विधि - रबर के विशेष छल्ले को इलास्ट्रेटर नामक छोटे से यंत्र से फैला कर शुक्राणु वाहक नलिकाओं पर चढ़ा देते हैं। धीरे-धीरे अंडकोष सूख जाता है और छल्ला खुद ही गिर जाता है।

(ग) शल्य क्रिया विधि : इसमें शुक्राणु वाहक नलिकाओं को ब्लेड से काट देते हैं। इसे किसी जानकार व्यक्ति से ही करवाना चाहिए और बरसात में बिलकुल नहीं करना चाहिए। क्योंकि इसके घाव में इंफेक्शन का डर रहता है।

5. टैगिंग : पहचान चिन्ह लगाना अपने रेकार्ड और बीमा कराने के लिए बहुत जरूरी है। इसके तीन तरीके हैं।

(क) गले में रस्सी या छल्ला डाल कर उसमें टोकन लटका देना, टोकन पर बकरी नम्बर परमानेंट मार्कर से लिख दें पर ध्यान रखें कि गले की रस्सी किसी चीज में फंसे नहीं। यह विधि सबसे आसान है लेकिन बकरियाँ झाड़ी में या बांस में इसे फंसा लेती हैं तो उसकी मृत्यु हो जाती है। बीमा के लिए भी यह उपयोगी नहीं है।

(ख) टैगिंग : प्लास्टिक या धातु के छल्लों पर नम्बर डाल कर कान में नत्थी कर दिया जाता है। पर इसमें भी समस्या है - कान का

आकार जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है बकरी की परेशानी बढ़ने लगती है।

(ग) गोदना - कान के अंदर बकरी नम्बर गोदना लिखने वाले से गोदवा देना भी एक अच्छी विधि है।

(घ) रंगों द्वारा चिन्हित करना भी एक प्रचलित विधि है - परंतु काली बकरियों पर ऐसा रंग नहीं चढ़ पाता। इसलिए हमारे यहाँ यह समाधान ठीक नहीं है।

टैगिंग से जुड़ी एक समस्या यह आती है कि बकरियों और मेमनों पर नंबर किस तरह डाला जाय। एक तरीका तो साधारण रूप से यह हो सकता है कि जब भी कोई बकरी खरीदी जाय या मेमनों का जन्म हो तो उसे सीधे ही एक नंबर दे दिया जाय। जैसे मान लीजिए अब तक 38 नं० तक की बकरियाँ हैं फिर चार मेमनों का जन्म हुआ तो उन्हें 39, 40, 41, 42 नम्बर दे दिया। उसके बाद दो बकरियाँ खरीदीं तो उन्हें 43, 44 नंबर दे दिया आदि आदि। यदि एक दो यूनिट हो तो यह ठीक है।

दूसरा तरीका यह हो सकता है कि तीन सीरीज बनाए जाएं। पहला बीजू बकरा सीरीज (1-99), बकरी सीरीज (100-999) और तीसरा मेमना सीरीज। मान लीजिए फार्म में 500 बकरियाँ हैं तो उन्हें 101 से 600 नंबर दे दिया। उनके जब मेमने होंगे तो उन्हें माता पशु सं०/मेमना संख्या से उन्हें पहचानेंगे-जैसे 476/1M, 476/2F, 476/3F, 476/4F। यदि तीनों बकरियाँ फार्म में प्रजनन योग्य हो जाती हैं तो उन्हें नया नंबर देंगे जैसे 601, 602, 603। यानी बकरी सीरीज परमानेंट नम्बर होता है और मेमनों को एक साल के लिए टेंपरारी नम्बर देते हैं। जो बिक गया वह बाहर गया, यदि रह गया तो नया नम्बर दिया। इस नम्बर सिस्टम से मेमनों को दूध पिलाने में आसानी होती है-माँ-बच्चों की पहचान तुरंत हो जाती है। इसमें ज्यादा बकरियों की संख्या संभाली जा सकती है।

(ङ) **डिपिंग :** डिपिंग यानी दवा के घोल में बकरी को डुबा कर उसके शरीर पर पाए जाने वाले जूंओं और कीड़ों का नाश करना एक महत्व-पूर्ण काम है। इससे संबंधित चर्चा स्वास्थ्य वाले अध्याय में देखें।

(च) **बाड़े का विसंक्रमण / शुद्धता :** हरेक 15 दिन पर बिना बुझे चूने का छिड़काव तथा 6 महीने या साल में एक बार 4''-6'' फर्श की मिट्टी का कटाव बाड़े को बीमारी से मुक्त रखने का एक प्रमुख उपाय है।

(छ) मौसम के अनुसार बकरी आवास में परिवर्तन करते रहना चाहिए। जैसे जाड़े के समय में बकरी घर को अच्छी तरह ढंकना और बरसात में पूरी तरह खोल देना आदि का भरपूर ध्यान रखना चाहिए।

(झ) प्रसव के समय देखभाल की जानकारी के लिए अगला अध्याय : प्रजनन प्रबंध देखें।

फार्म रजिस्टर

व्यावसायिक बकरी फार्म पर मुख्यतः दो तरह के रजिस्टर होते हैं। पहले में तकनीकी जानकारी दर्ज की जाती है और दूसरे रजिस्टर में आमद-खर्च का हिसाब किताब रखा जाता है। तकनीकी रजिस्टर में कम से कम तीन चीजों का ब्योरा अवश्य रखना चाहिए:

(i) मेमनों और बकरियों की वजन वृद्धि दर
(ii) प्रजनन संबंधी विवरण
(iii) टीकाकरण/कीटनाशन/स्वास्थ्य विवरण

इन तीन विषयों पर जानकारी इस प्रकार रखी जा सकती है:

(i) वजन संबंधी विवरण

क्र. सं.	मेमने/ बकरी/ बकरे के चिह्न संख्या	जन्म तिथि	लिंग	वजन (कि० ग्रा०)											
				1 माह	2 माह	3 माह	4 माह	5 माह	6 माह	7 माह	8 माह	9 माह	10 माह	11 माह	12 माह

(ii) प्रजनन संबंधी विवरण

क्र० स०	बकरी का न०	जन्म तिथि उम्र	हीट/ गर्भाधान की तिथि	बीजू बकरे का न०	संभावित प्रसव तिथि	वास्तविक प्रसव तिथि	मेमनों की संख्या नर-मादा	टिप्पणी

(iii) टीकाकरण/कीटनाशन/स्वास्थ्य विवरण

क्र० स०	मेमने/ बकरी/ बकरे की संख्या	दिनांक	टीकाकरण/ कीटनाशन	बीमारी का नाम	बीमारी का समय तिथि से तिथि तक	चिकित्सा एवं दवा	परिणाम

इस प्रकार के रजिस्टर से बड़े पैमाने के उत्पादन को संगठित करना आसान हो जाता है। आगे प्रत्येक बकरी का **'पशु-विवरण कार्ड'** का प्रारूप भी दिया गया है। ऐसा कार्ड छपा कर आप इस पर निगरानी रख सकते हैं कि कौन सी बकरी कब प्रसव करेगी, किस मेमने को कब और कौन-सा टीका लगना है आदि-आदि, परंतु कम पढ़े लिखे फार्म-मालिकों को यदि दिक्कत महसूस हो तो यह काम छोड़ दे सकते हैं।

अनादि बकरी फार्म

तिथि.....

क्र० सं०.....पशु सं०.....लिंग.....जन्म तिथि.....

माता पशु सं०.....पिता पशु सं०.....रंग .....नस्ल.....

वजन चार्ट

वर्ष महीना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1												
2												
3												

कीटनाशक/टीकाकरण चार्ट

तिथि/कीटनाशन	पीपीआर	एफएमडी	जी.पी	ई०टी०	एच०एस०	टेटनस

बकरियों के प्रजनन संबंधी विवरण

मासिक/हीट की तिथि	गर्भाधान की तिथि	बीजू बकरे का न०	संभावित प्रसव तिथि	वास्तविक प्रसव तिथि	मेमनों की सं० नर-मादा	टिप्पणी

बीमारी संबंधी विवरण

बीमारी का नाम	बीमारी की तिथि ..... से ..... तक	चिकित्सा/दवा	परिणाम

टिप्पणी:

ऊपर जो **'पशु विवरण कार्ड'** का प्रारूप दिया गया है उसे तीन रंगों -लाल, पीला, हरा, में छपवाएँ- लाल रंग का कार्ड बकरियों के लिए, पीला रंग का बीजू बकरों के लिए तथा हरा मेमनों के लिए रखें। इस कार्ड सिस्टम से बड़े उत्पादकों को जो 100 से 1000 बकरियां रखना चाहते हैं, बहुत लाभ होगा- बड़ी कंपनियां इस कार्ड को देखकर पशुओं के स्वास्थ्य का अंदाजा लगा सकती हैं और इसलिए ज्यादा कीमत दे सकती हैं। छोटे उत्पादक एक ही रंग में इस कार्ड का फोटो-कॉपी कर कर रख सकते हैं।

दूसरी श्रेणी का रजिस्टर यानी व्यावसायिक रजिस्टर रखना बहुत जरूरी है। इसमें फार्म के आमद-खर्च का हिसाब-किताब ठीक से दर्ज करना चाहिए। फार्म पर चारा-दाना कितने की खरीद हुई; मजदूरी, दवा, टीका, डॉक्टर पर कितना खर्च हुआ तथा फार्म पर बिक्री से कितनी आमदनी हुई, यह सब हिसाब प्रत्येक फार्म-मालिक को रखना चाहिए। आमद-खर्च का हिसाब जैसे आप अपने घर में रखते हैं वैसे ही डायरी में लिख कर रखें। प्रत्येक महीने कितने पशु आपके फार्म पर हैं इसका ब्योरा जरूर रखें।

स्टॉक रजिस्टर

माह	*बीजू बकरों की संख्या*	*बकरियों की संख्या*	*3 महीने से कम के मेमनें*	*3-12 महीने के नर*	*3-12 महीने के मादा*	*कुल संख्या*

पाँचवां कदम : प्रजनन प्रबंध

बकरियों के नस्ल सुधार पर अभी भी बहुत ध्यान देने की जरूरत है। बीजू बकरों के चुनाव तथा आधुनिक विकसित प्रजनन विधियों से निश्चय ही फायदा हो सकता है, परंतु गाय की तर्ज पर बकरियों के कृत्रिम गर्भाधान की व्यवस्था बिहार में अभी संभव नहीं है, इसमें अभी थोड़ा समय लगेगा। कुछ किसान भाई बाहर से उन्नत नस्ल के बीजू बकरों को लाने की बात भी करते हैं, वह भी अभी तुरंत व्यावहारिक नहीं है। एक यूनिट लगाने वाला छोटा बकरी पालक इतना खर्च संभवतः नहीं कर पाएगा। जब तक व्यावसायिक बकरी पालन में बहुत सारे लोग शामिल नहीं हो जाते तब तक बाहर से बीजू बकरा लाना या आपस में बदलेन करना संभव नहीं होगा। आगे चल कर प्रायः ऐसी संस्थाएं सामने आ जाएं, जो बड़ी संख्या में बीजू बकरों का पालन और आपूर्ति करें; परंतु जब तक ऐसा नहीं होता हमें अपने गांव के आस-पास मौजूद बीजू बकरों से ही काम चलाना पड़ेगा। हमें उम्मीद है कि दो से तीन सालों में यानी 2013-14 ई० तक बिहार में बीजू बकरों का अच्छा भंडार हम लोग विकसित कर लेंगे।

दूसरी बात यह है कि हम लोग 'क्रॉसब्रिडिंग' यानी दूसरे नस्ल के नरों के साथ संयोग वाले सिद्धांत के पक्ष में नहीं हैं। इससे हमारी बकरी के गुण सात पीढ़ियों यानी कुल तीन-चार वर्षों के अंदर ही मिट जाएंगे। हमें अपने देसी नस्ल के बकरों को ही बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा जोर ब्लैक बंगाल तथा अन्य देशी नस्ल की बकरियों को विकसित करने पर होना चाहिए। याद रखिए यदि हमने चार से छः मेमने नियमित रूप से देने वाली ब्लैक बंगाल नस्ल की बकरियाँ, जिनका 9 महीने में शरीर भार 20 किलो हो, विकसित कर लिया, तो हम पूरी दुनिया पर छा जाएंगे। हमें इसी लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि आप दूसरी नस्ल का बकरा लाएंगे तो दूसरे पर निर्भरता हमेशा बनी रहेगी। इस बात इसका ध्यान रखें कि भाई-बहन या बाप-बेटी में अंतः प्रजनन न हो, क्योंकि इससे बकरियों में

बीमारियाँ बढ़ती हैं और आकार भी छोटा होता जाता है। हर बार नई जगह से स्वस्थ्य बीजू बकरों का चुनाव करें और दूसरे फार्मों के साथ बदलेन करते रहें।

प्रजनन ऋतु

बकरियाँ ऐसी पशु हैं जो साल भर गर्भधारण के योग्य बनी रहती है। इसे बिजाण्डी बहुमद चक्र वाली पशु कहा जाता है। इसका औसत ऋतु चक्र 17-22 दिनों का होता है, यानी यदि बकरी को गर्मी में आने के बाद भी गाभिन नहीं कराया गया तो फिर अगले 17-22 दिनों के बीच गर्मी में आएगी और यह क्रम चलता रहेगा। यदि गाभिन हो गयी तो प्रसव के 50 से 77 दिनों के बाद वह फिर से गर्मी में आएगी।

हमारी देसी बकरी / ब्लैक बंगाल का यौवनारंभ 150 दिनों में होता है, जबकि लैंगिक परिपक्वता करीब 240 दिनों में होता है। इसकी गर्भ-अवधि 143 दिनों की होती है। यानी 8 महीने में पहली बार गाभिन, 13 महीने में पहला प्रसव, फिर दो महीने बाद गाभिन, फिर पाँच महीने में प्रसव, फिर दो महीने बाद गाभिन और पाँच महीने में प्रसव यह क्रम चलता रहता है। नर और मादा की यौवनारंभ अवधि में थोड़ा अंतर होता है। जहाँ मादा का यौवनारंभ 5-6 माह में हो जाता है वहीं नर का 9-10 महीने लग जाते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि बकरियों को उम्र देखने के बजाय 12 किलो वजन होते ही गाभिन करा देना चाहिए ।

बकरियों की प्रजनन क्षमता 2-3 वर्ष की आयु में सबसे अच्छी होती है और 7 वर्ष की उम्र तक यह जीवनक्षम बच्चे देती रहती है। वैसे 10 वर्ष की आयु तक भी बकरियां उर्वर बनी रहती हैं और इनकी उम्र 12 वर्ष के आस-पास तक होती है परंतु वैज्ञानिकों का मानना है कि बकरियों को 7-8 वर्ष और बीजू-बकरों को 3-5 वर्ष की उम्र से ज्यादा रेवड़/फार्म में नहीं रखना चाहिए।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, बकरियों का औसत ऋतु चक्र 17 से 22 दिनों का होता है, जिसकी अवधि 24 से 48 घंटे की होती है। यदि किसी कारण से बकरी को गाभिन नहीं कराया जा सका, तो फिर 17-22 दिनों बाद बकरी गर्मी में आएगी। गर्मी में आने की क्या पहचान है?

- नर बकरे में रूचि लेना
- अधिक उत्तेजना, दूसरी बकरियों पर चढ़ना

- पूंछ बार-बार हिलाना
- लगातार मिमयाना
- योनि में सूजन एवं स्राव होना
- जल्दी-जल्दी मूत्र त्याग करना
- असंगत भूख का होना
- दूध की मात्रा में कमी होना

जरूरी नहीं कि सभी लक्षण एक साथ ही मौजूद हों, पर इनमें से कुछ यदि सामने आते हैं तो यह गर्मी का लक्षण हो सकता है। बकरी के गर्मी में आते ही तुरंत पाल नहीं खिलाना चाहिए या तुरंत बीजू बकरे/बोतो के पास नहीं ले जाना चाहिए। गर्मी में आने के 8 से 12 घंटे के बाद ही उसे पाल खिलाना चाहिए। डाक्टर लोग यह सलाह देते हैं कि पहले पाल के 12 घंटे बाद एक बार और पाल खिलाना चाहिए। इससे गाभिन होने की संभावना काफी बढ़ जाती है, नहीं तो 20-22 दिनों की अवधि खाली चली जाएगी।

वैसे तो हमारी देसी बकरी 6-7 महीने में प्रजनन के लिए तैयार हो जाती है, परंतु पहला गर्भधारण 8-9 महीने से पहले नहीं कराएं। इससे बकरी का शरीर बेहतर तैयार हो जाता है और मेमने भी अधिक वजन के होते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि बकरी 10-12 किलो वजन की हो जाए तो पहले भी गाभिन कराया जा सकता है। साथ ही प्रत्येक दो ब्यांतों के बाद 1-2 महीने का गैप/विराम देना अच्छा होता है। जैसे खेत को बीच-बीच में परती छोड़ देने से उर्वरता बढ़ती है वैसे ही बकरियों को भी बीच-बीच में खाली छोड़ देना चाहिए।

यहाँ ध्यान रखने की सबसे बड़ी बात यह है कि गाभिन कराने का सबसे अच्छा समय मार्च-अप्रैल और फिर अक्टूबर-नवंबर महीने होते हैं। यदि इन महीनों के दौरान आप बकरी को गाभिन कराएंगे तो मेमनों का जन्म ऐसे मौसम में होगा जब न ज्यादा गर्मी होती है और न ज्यादा सर्दी। ऐसे मौसम में मेमनों की देखभाल आसानी से हो जाती है। कम से कम जुलाई-अगस्त के महीनों में बकरी को गाभिन नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे मेमनों का जन्म दिसंबर-जनवरी के ठंडे महीनों में होगा और ठंड में मेमनों को जीवित बचाने में भारी कठिनाई होती है। गर्भावस्था के आखिरी एक महीने में बकरियों को टेटनस बचाव की सुई (टेटभैक) जरूर लगवा देना चाहिए। आखिरी दिनों में गर्भपात से बचने के लिए प्रसव तिथि से एक महीना पहले डॉक्टर से पूछ कर टेरामाइसीन का इंजेक्शन भी लगवा दें।

प्रसव प्रक्रिया

बकरियों के ऊपर नंबर डाल कर यदि उनके ऋतु-चक्र की तिथि को दर्ज करके रखा जाय तो प्रसव की तिथि का अनुमान और पहले से तैयारी रखी जा सकती है। ब्लैक बंगाल/देसी बकरियों में प्रसव की प्रक्रिया 105 से 365 मिनट तक चलती है।

आवास प्रबंध

प्रजनन के लिए एक अलग कमरा तैयार रखना चाहिए जिसका फर्श सीमेंट का हो। इससे सफाई में आसानी हो जाती है। फर्श के ऊपर पुआल रख कर उस पर गाभिन बकरी को रखना चाहिए। यदि कमरा अलग बना हुआ न हो तो फार्म के एक कोने में ईंट और सीमेंट से साधारण चबूतरा बना कर भी काम चलाया जा सकता है। यदि यह भी न हो तो मिट्टी पर साफ प्लास्टिक बिछा कर उस पर पुआल डाल देना चाहिए। यदि मिट्टी पर ही प्रसव हो गया हो तो प्रसव के बाद वहाँ से 4-6 ईंच मोटी मिट्टी काट कर निकाल दें। परंतु यह बार-बार करना कठिन काम होता है। प्रसव के बाद वहां रखा पुआल उठा कर कम्पोस्ट के गढ्ढे में डाल दें। पानी से फर्श को साफ कर चूने का छिड़काव कर दें। प्रसव के बाद बकरी और उसके मेमनों को 1 मी० X 1 मी० के केबिन में 5 से 7 दिनों तक रखें। मेमनों के लिए नरम मुलायम भूसे के बिस्तर की व्यवस्था करें। यह व्यवस्था मौसम के अनुरूप भी होनी चाहिए। बकरी यदि खड़े-खड़े प्रसव कर रही हो तो बच्चे का ध्यान रखें कि वह जमीन पर न गिरे, उसे हाथ से सहारा देकर निकालें।

प्रसूता बकरी की देखभाल

सामान्यतः प्रसव के छः घंटे के अंदर ही बकरी का जेर (प्लेसेंटा) गिर जाता है। परंतु यदि किसी कारण से यह पूरा न गिर पाया हो तो एक ईंच मोटी लकड़ी ले कर जेर के निकले हुए हिस्से को धीरे-धीरे घुमा-घुमा कर लपेट लें। यदि जेर बाहर आ जाय तो ठीक है, नहीं तो पशु चिकित्सक को बुलाएं। जेर निकलने में यदि दिक्कत हो तो डॉक्टर से पूछ कर यूट्राटोन नामक दवा दी जा सकती है।

जेर निकलने के बाद बकरी के थन, योनि और आस-पास के हिस्से को लाल दवाई मिले हल्के गर्म पानी से धोकर साफ कपड़े या तौलिये से पोंछ दें।

योनि पर टिंचर-आयोडीन लगा दें। पशु चिकित्सकों के अनुसार जेर गिरने के बाद एक खास तरह के लंबे चिमटे से पेंसिलीन नामक दवाई की एक गोली योनि मार्ग से बकरी के गर्भाशय में डाल देनी चाहिए। परंतु इस तरह के काम बिना अनुभव और जानकारी के ना करें। किसी पशुचिकित्सक या जानकार व्यक्ति से इस काम को करना पहले सीख लें।

बकरी और मेमने जहाँ रहेंगे, वह जगह अच्छी तरह साफ और रोगाणुमुक्त वातावरण वाली होनी चाहिए। अनावश्यक सामान बाड़े में न रहें। केबिन गीला न हो। पक्के फर्श की सफाई फिनायल से कर चूने का छिड़काव करें। प्रसव से एक महीना पहले गर्भवती बकरी को टेटनस का सुई लगा देना मेमनों को टेटनस होने से बचाता है।

मेमनों की हिफाजत

प्रसव के समय मेमनों की देखभाल के लिए साफ कपड़ा, नया ब्लेड, धागा, टिंचर-आयोडीन आदि तैयार रखना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए कि प्रसव साफ सुथरी जगह में हो। जन्म के बाद सबसे पहला काम मेमनों के नथुनों को साफ कर सामान्य रूप से सांस लेने की जांच करें। यदि मेमने को सांस लेने में परेशानी हो रही है तो जमीन पर उल्टा लिटा कर उसके आगे की दोनों टांगों को इस तरह ऊपर नीचे करें कि उससे फेफेड़ों पर हल्का दवाब पड़े। इससे मेमने को सामान्य सांस लेने में मदद मिलेगी। मेमने के शरीर के चारों तरफ लिपटी झिल्ली को हटा कर साफ एवं मुलायम कपड़े से शरीर को पोंछ कर सफाई करें। इसे बकरी के सामने चाटने के लिए छोड़ दें। फिर तौलिए से पोंछ कर वहाँ से हटा दें।

नाड़ काटना

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण काम है मेमनों का नाड़ काटना। नाड़ को शरीर से दो उंगली (चार सें०मी०) नीचे धागे से कस कर बांध दें और फिर बंधे स्थान से आधी उंगली (1 से०मी०) नीचे से नाड़ काट दें। कटे हुए हिस्से पर टिंचर-आयोडीन लगा दें। कम से कम एक सप्ताह तक टिंचर आयोडीन लगाएं। इसके बाद पहले से तैयार (1 मी० X 1 मी० X 1 मी०) केबिन में ही बकरी और सभी मेमनों को कम से कम पांच-सात दिनों तक रखें।

आहार

जन्म के आधे-घंटे के अंदर मेमनों को बकरी का दूध-अवश्य पिलाएं। प्रसव के ठीक बाद तुरंत जो पहला दूध निकलता है उसमें बहुत गुण होते हैं। इस दूध को खीस भी कहा जाता है। खीस या पहला दूध (कोलेस्ट्रम) में चार गुणा अधिक प्रोटीन और बीमारियों से लड़ने की क्षमता होती है, इसे जन्म के आधे घंटे के भीतर अवश्य पिलाएं। प्रथम ब्यांतवाली बकरी अपने थन में मेमनों को मुहँ नहीं लगाने देती - इसलिए बकरी को पकड़ कर मेमनों की मदद करनी चाहिए और थोड़ा-थोड़ा खीस घंटे-दो घंटे पर पिलाते रहना चाहिए। संभव हो तो हर बार खीस पिलाने से पहले लाल दवाई (पोटाशियम पर मैगनेट) मिले हल्के गर्म पानी से बकरी के थन को धो दें। यदि बकरी बच्चों के पीने से ज्यादा दूध दे रही हो तो दूध निकाल कर थन खाली कर दें।

खीस की मात्रा शरीर भार के 1/10 हिस्से के बराबर होनी चाहिए। यानी यदि नवजात मेमने का वजन 1 किलो है तो उसे 100 ग्राम खीस पिलाना चाहिए। 5-15 दिनों तक दिन में चार बार, 15-30 दिनों तक रोज तीन बार, 30-90 दिनों तक दो बार दूध पिलाना चाहिए। यदि खीस न हो तो कृत्रिम खीस और दूध कम हो तो कृत्रिम दूध बना कर दिया जा सकता है। गाय-भैंस का दूध भी पतला करके दिया जा सकता है। बोतल से दूध पिलाने पर बोतल की सफाई का पूरा ध्यान रखें। यदि खीस सभी मेमनों के लिए पर्याप्त न हो या बकरी पूरा दूध न दे रही हो, (ऐसी स्थिति में बकरी टांग झटकेगी) तो कृत्रिम खीस बना कर पिलाना चाहिए। इसे बनाने का इंतजाम पहले से ही करके रखें।

चार्ट : 5.1 - कृत्रिम खीस बनाने की विधि

उबाल कर ठंडा किया पानी	- 200 ग्रा०
साधारण दूध	- 300 ग्रा०
मुर्गी का अंडा (सिर्फ सफेद भाग)	- 1
तरल पैराफिन या अंडी का तेल	- 10 ग्रा०/ मि. ली.
विटामिन 'ए' का घोल (दवाई की दुकान में मिलेगा)	- 10 ग्रा०/ मि. ली.

इस सामग्री को साफ बरतन में मिला कर तैयार कर लें और बच्चों के दूध पिलाने वाले बोतल से मेमनों को पिलाएं। हर बार पिलाने के लिए ताजा खीस तैयार करें। पहले का रखा हुआ कृत्रिम खीस कभी न पिलाएं। दिन में तीन बार

इस कृत्रिम खीस को पिलाएं। अंडी का तेल और दवाई/विटामिन 'ए' नापने के लिए बच्चों की दवाई में जो ड्रॉपर मिलता है उसका उपयोग करें। पंद्रह दिनों तक मेमनों को सिर्फ दूध पर ही रखना चाहिए। उसके बाद नरम मुलायम पत्तियाँ उन्हें खाने के लिए देना शुरू करें। जन्म से तीन महीनों तक मेमनों को दूध पिलाया जाता है, उसके बाद दूध बंद कर देना चाहिए। इन तीन महीनों के दौरान कितना दूध पिलाना चाहिए; इसे जानने के लिए मेमनों को वजन करें और दूध का प्रतिशत इस सूत्र पर निकालें।

चार्ट : 5.2 - मेमनों के आहार की मात्रा

आयु (दिनों में)	*दूध की मात्रा/ शरीर भार का प्रतिशत*	*दाना (ग्राम)*	*हरे पत्ते*
0-15	10-15	-	-
15-30	10-15	20	इच्छानुसार
30-60	12	40	"
60-90	3	70	"

मोटे तौर पर जन्म से 15 दिनों तक 150-200 ग्राम दूध प्रत्येक मेमनों को मिलना चाहिए। यदि बकरी पूरा दूध दे रही है तो ठीक है, नहीं तो ऊपर से दूध देने का इंतजाम करना होगा। पंद्रह दिनों के बाद दूध चाहें तो धीरे-धीरे कम भी कर दें। परंतु 15 दिनों तक दूध ठीक से दें, क्योंकि मेमना और कोई चीज नहीं पचा सकता। यदि बकरी पूरा दूध नहीं दे रही हो तो कृत्रिम दूध बना कर दे सकते हैं। एक किलो कृत्रिम दूध पाउडर बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री लें:-

चार्ट:- 5.3 कृत्रिम दूध की सामग्री

दूध पाउडर	:	470 ग्राम
सोयाबीन चूर्ण	:	90 ग्राम
गेहूँ का आटा	:	350 ग्राम
नारियल का तेल	:	70 ग्राम
खनिज लवण	:	20 ग्राम

इस पाउडर में यदि संभव हो तो 0.2 मि.ली. व्यूटायरिक एसिड, 2 ग्रा० साइट्रिक ऐसिड और थोड़ा (1.5×10^8 स्पोर्स/कि०ग्रा०) प्रोबायोटिक्स पाउडर मिला दें। इस दूध पाउडर का 135 ग्राम चूर्ण एक लीटर गुनगुने पानी में मिलाएं और 250-350 ग्राम प्रति मेमना प्रतिदिन पिलाएं। चूंकि दूध दो बार पिलाना होगा, इसलिए मेमनों की संख्या के हिसाब से उतना ही दूध बनाएं जितना तुरंत खर्च हो जाए। दूध की मात्रा नापने के लिए मिल्क पाउडर के अंदर जो चम्मच रहता है, उसका नापना के रूप में उपयोग करें। यह कृत्रिम दूध हो सकता है मेमने तुरंत पसंद न करें इसीलिए इस दूध को असली दूध में मिला कर इस प्रकार देना शुरू करें।

चार्ट 5.4 : दुग्ध विकल्प देने का तरीका

दिन	कृत्रिम दूध	असली दूध
पहला सप्ताह	10%	90%
दूसरा	25%	75%
तीसरा	50%	50%
चौथा	75%	25%
पाँचवां	90%	10%
तीन महीने तक	100%	-----

यानी महीने-डेढ़ महीने में धीरे-धीरे कृत्रिम दूध की मात्रा बढ़ाते जाएं और असली दूध की मात्रा घटाते जाएं। कृत्रिम दूध देने में निम्नलिखित सावधानी अवश्य रखें:

1. दूध पाउडर को 40 डिग्री सेल्सियस तापमान यानी बहुत हल्का गरम पानी में अच्छी तरह मिला कर बनाएं।
2. दूध को पिलाने के 10 मिनट के अंदर ही बनाएं।
3. बोतल और निप्पल को अच्छी तरह साफ करें, उसमें कहीं साबुन लगा न रह जाय और फिर गरम पानी में खौलाएं।
4. कृत्रिम दूध या दुग्ध विकल्प सुबह-शाम सिर्फ दो बार ही पिलाएं।
5. तीन महीने बाद इसकी कोई जरूरत नहीं।

कृत्रिम खीस और कृत्रिम दूध बनाना थोड़ा झंझट का काम है, पर यह तो तभी होगा जब बकरी दूध न दे रही हो। आम तौर पर यदि आप बकरी को

ठीक से चारा दाना दें तो वह खुद दूध देगी और यह सब नहीं करना पड़ेगा। यह जानकारी सिर्फ इसलिए जरूरी है कि इमर्जेंसी में क्या करना चाहिए? साधारणतया इन चीजों की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। गांवों में जहाँ गाय-भैंस का दूध उपलब्ध हो, वहां उसी दूध को पतला करके देना ज्यादा आसान और सस्ता पड़ेगा।

छठा कदम : स्वास्थ्य प्रबंध

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि स्वस्थ बकरियों की क्या पहचान है? स्वस्थ पशु भोजन में पूरी रूचि लेता है एवं भोजन के बाद खड़े हो कर या आराम से बैठ कर जुगाली करता है। इसकी आँखें चमकीली, कान चौकन्ने, नथुने गीले होते हैं। नथुना यदि सूखा है तो पशु बीमार है। आँखों का रंग नीला होना चाहिए यदि सफेद, लाल या पीला है तो ये रोग के लक्षण हैं। कान यदि गिरे हुए हों तो पशु अस्वस्थ है। गर्दन चिकना होना चाहिए और गर्दन पर कोई गांठ नहीं होनी चाहिए। गाल फूलना या गाल का ठोस हो जाना भी खराब है। दोनों टांगों के बीच सूजन खराब है। बकरी की मेंगनी/लीद न तो बहुत कड़ी होनी चाहिए न ही बहुत गीली। अच्छी लीद वह होती है जो जमीन पर गिरने से थोड़ी चिपटी हो जाए। मेंगनी का बहुत पीला होना लीवर की खराबी का लक्षण है। लीद कड़ा है तो कब्जियत और पनीला और खून के साथ आ रहा तो यह डायरिया का लक्षण होता है।

पेशाब हल्का पीला परंतु बिना तलछट के होना चाहिए। स्वस्थ बकरी आठ-दस बार मल-मूत्र त्याग करती है। इसके शरीर का तापमान 102 डिग्री तक रहता है जो मानव के शरीर से थोड़ा ज्यादा है। स्वस्थ बकरी के जोड़ों पर कोई गांठ नहीं होनी चाहिए, यह कैल्शियम की कमी से होता है। इसके दांत बहुत पीले नहीं होने चाहिए यह पानी में फ्लोराइड की अधिकता से होता है। बकरी का लंगड़ा कर चलना उसके अस्वस्थ होने का चिन्ह है। स्वस्थ बकरी के बाल खूब चमकीले होते हैं और नए आंगुतकों को देख कर चौकन्ना हो जाती है।

इस प्रकार सामान्य व्यक्ति भी सिर्फ देख कर अनुमान लगा सकता है कि उसकी बकरी स्वस्थ है या नहीं। अस्वस्थ बकरी हमेशा अपने झुंड से दूर जा कर खड़ी हो जाती है। ऐसी सुस्त पड़ी बकरियों को तुरंत अपने फार्म से बाहर निकाल कर दूर कर दें या बीमार घर में रखें। आगे बकरियों के रोगों और उनके इलाज का विवरण दिया गया है। परंतु दवाई देने से पहले अपने पशु चिकित्सक की राय अवश्य ले लें।

स्वस्थ बकरी

- आंखें नीली और चमकीली
- नथुने गीले
- कान चौकन्ने और खड़े
- भोजन में रूचि और जुगाली
- गर्दन चिकना
- लीद गिरते ही चिपटी
- पेशाब हल्का पीला
- शरीर का तापमान 102^0F

अस्वस्थ बकरी

- झुंड से दूर खड़ी
- आँखें-लाल, पीली या सफेद
- कान गिरे हुए
- नथुना सूखा
- गर्दन और जोड़ों पर गांठ
- भोजन में अरूचि, जुगाली बंद
- गाल में सूजन
- टांगों के बीच सूजन
- लीद बहुत कड़ी या बहुत पतली या पीली
- पेशाब में तलछट
- दांत बहुत पीला
- लंगड़ापन
- शरीर का तापमान ज्यादा
- शरीर पर कीड़े

रोग, निदान एवं दवाएँ

बकरियों में तीन तरह के रोग पाए जाते हैं (i) परजीवी रोग (ii) विषाणु रोग (iii) जीवाणु रोग।

परजीवी रोग

अन्य पालतू पशुओं की तरह बकरियों के शरीर के ऊपर तथा पेट के अंदर कई प्रकार के परजीवी कीड़े पैदा हो जाते हैं। इन कीड़ों से बकरियां मरती तो नहीं हैं पर वे खून चूस कर इनके विकास को रोक देते हैं और उससे पैसे का नुकसान होता है। बकरियों के शरीर पर ढील, लीख, चिल्लर, कुकुरमाछी आदि छोटे-बड़े कई कीड़े पनपने लगते हैं, जबकि पेट के अंदर गोल कृमि (रांउडवर्म), फीता कृमि (टेपवर्म) पर्ण कृमि (लीफवर्म) आदि पाए जाते हैं। यदि बकरियों को इन परजीवी कीड़ों से बचा लिया जाय तो उनका वजन तेजी से बढ़ेगा और आपका मुनाफा भी।

इन कीटाणुओं से बचने के लिए बाड़े की अच्छी सफाई और बढ़िया फार्म प्रबंध करें। जब भी आप कोई नई बकरी फार्म में लाएं तो उसकी डिपिंग/स्प्रे के लिए मेलाथिओन दवाई का 800 मी०ली० भाग 100 लीटर पानी में (10 लीटर पानी में 80 मी०ली०) मिला कर बकरियों को नहा दें। फिर बाल सूख जाने के बाद ब्रश चला दें। ज्यादातर ऊपरी कीटाणु नष्ट हो जाएंगे। यदि इससे भी खत्म न हो तो आइवरमैक्टिन नाम की सुई बकरियों की गर्दन की चमड़ी (सबकट) में लगवा दें। यह दवाई 50 किलो वजन होने पर 1 मि०ली० या 10 कि०ग्रा० होने पर 1/5 मी०ली० दी जाती है। बकरी के वजन के हिसाब से दवाई की मात्रा निश्चित की जाती है। यदि आप बकरियों को घास चरने बाहर नहीं भेजते, जमीन पर गिरा खाना नहीं देते, और लीद की सफाई की अच्छी व्यवस्था रखते हैं तो पेट के अंदर कीड़ा नहीं होगा। परंतु यदि कभी हो जाय तो फेंटास, पानाकुर या बेनभेट आदि दवाईयाँ डाक्टर से मात्रा पूछ कर दे सकते हैं। (आवश्यकता पड़ने पर हमारे हेल्पलाइन नं० पर भी संपर्क कर सकते हैं)

डिपिंग से पहले ध्यान रखने की बातें

- दवा की मात्रा बहुत ज्यादा न हो
- डिपिंग और स्प्रे से पहले पशुओं को पानी अवश्य पिला दें।
- सर्दी शुरू होने से पहले सितंवर-अक्टूबर में डिपिंग/स्प्रे एक बार अवश्य करें।
- डिपिंग/स्प्रे का काम उस दिन करें जिस दिन पूरी धूप खिली हुई हो ताकि भीगने के बाद बकरियाँ जल्दी सूख जाएं।
- लंबे बालों को समय-समय पर काट दें।

- डिपिंग के बाद बालों में ब्रश जरूर चलाएँ।
- बाड़े में भीड-भाड़ कम और सफाई पूरी हो।

देसी दवाएँ

इन रोगों का देसी उपचार संभव है। बाहरी परजीवी जैसे ढील, लीख, चिल्लर, कुकुरमाछी आदि के लिए नीम के पत्ते का अर्क निकाल कर लगाने से ये परजीवी नष्ट हो जाते हैं। इसी तरह करेले का अर्क और नीम के तेल से भी फायदा होता है। पेट के अंदर के कीटाणुओं के लिए मेमनों को 20-30 मि० ली० (चार छः चम्मच) सरसों तेल में 10-15 ग्राम नमक डाल कर पिलाएं। इसी तरह एक पाव आधा किलो मठ्ठे में 10-20 ग्राम नमक डाल कर एक सप्ताह के अंतर पर दो बार पिलाने से पेट के कीड़े बाहर आ जाते हैं। एक पाव मूली के पत्ते, या एक पाव प्याज या लहसुन के अर्क में 10-15 ग्रा० नमक मिला कर पिलाने से भी पेट के कीड़े गिर जाते हैं। 50 ग्राम सरसों का तेल, 10 ग्राम कत्था और 10 ग्राम नमक पिलाना भी काफी फायदेमंद होता है।

कुकड़िया

कुकड़िया या काक्सीडियोसिस भी एक अंतः परजीवी रोग है, जो आंत की दीवार पर पाए जाने वाले कीटाणुओं के कारण होता है। 4-6 महीने के मेमनों में विशेषतः पाये जाने वाले इस परजीवी के कारण दुर्गन्ध-युक्त पीला या हरा दस्त होने लगता है, जो दो सप्ताह तक चल सकता है। इसका उपचार सल्फा ग्रुप के औषिधयों से होता है। सल्फाडिमीडीन (150 mg/kg.), सल्फाग्वानिडीन (1.3 gm/kg) ऐम्प्रालियम (50-100 mg/kg) आदि दवाओं को डाक्टर से मात्रा पूछ कर 4-5 दिनों तक पिलाने से सहायता मिलती है।

परजीवी निमोनिया

यह रोग श्वासनली के परजीवी के कारण होता है। इसमें खांसी और नाक से गाढ़ा स्राव तथा सांस तेज चलने की शिकायत आती है। पशुओं को बुखार भी आ जाता है। इस रोग में ऐल्बेंडाजोल (7.5 mg/kg) और टेट्रामीसोल (15 mg/kg) की गोली तथा डाईइथाईल कार्बामैजीन (50 mg/kg) का सब कट (चमड़ी) में इंजेक्शन देने की सलाह डाक्टर देते हैं।

विषाणु रोग

विषाणु रोग छूत के रोग होते हैं जो हवा, पानी एवं भोजन से फैल कर महामारी का रूप धारण कर सकते हैं। इनमें से कुछ रोग जैसे मोहा, एफ.एम.डी. आदि कम खतरनाक होते हैं, जबकि कुछ रोग जैसे बकरी प्लेग (पी.पी.आर.), बकरी चेचक, रैबीज आदि ज्यादा खतरनाक होते हैं। ज्यादातर विषाणु रोगों का कोई ईलाज नहीं है, आप पहले ही टीका लगवा दें तो रोग नहीं होगा, पर एक बार हो गया तो कोई खास दवा नहीं है। इसलिए टीकाकरण पर भरपूर ध्यान दें।

मोहा

मोहा या कोन्टेजियस ऐक्थईमा रोग बकरियों के मुँह और होंठ के आस-पास की फुंसियों के रूप में प्रकट होता है। यह सर्दी के आरंभ और शुष्क मौसम में तीन से छः महीने के मेमनों को अधिक प्रभावित करता है। इसका कोई निश्चित इलाज नहीं है स्वतः कुछ दिनों में ठीक हो जाता है। पशुओं के घाव को नमक पानी से धो कर एंटीबायोटिक क्रीम लगाने से राहत मिलती है।

बकरी चेचक

यह बिहार-बंगाल क्षेत्र में बकरियों की सबसे घातक बीमारी है। यह मेमनों में पाया जाने वाला एक छूत का रोग है। जिसमें मृत्यु दर 50% होता है। इसका **लक्षण** उच्च तापमान, आँख-नाक बहना, बाल विहीन स्थानों पर फफोला निकलने के रूप में सामने आता है। यह रोग होने से पहले ही टीका लगवा देना चाहिए, परंतु हो जाने के बाद कोई खास इलाज नहीं है। टीका लगा देने से यह रोग नहीं होता है। हाइड्रोजन पैराक्साइड देकर गर्म पानी से धोने एवं एंटीबायोटिक के इंजेक्शन से थोड़ी मदद मिलती है। **इलाजः** टीका।

बकरी प्लेग

वकरी प्लेग या पी०पी०आर० फ्रांस से आयी एक बीमारी है, जो विदेशी नस्ल के पशुओं के साथ भारत आ गयी। यह रोग सांस के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है और 4-5 दिनों बाद बुखार हो जाता है - 105-106^0 F तक बुखार चला जाता है, नाक बहने लगती है, मुँह में छाले, भयंकर दस्त और निमोनिया हो जाता है। इसमें मृत्यु करीब-करीब तय ही होती है। यदि आप पहले ही सरकारी डाक्टर से पी०पी०आर० का टीका लगवा लें तो यह रोग नहीं होगा।

एफ०एम०डी० (खुरपका-मुँहपका)

यह भी अत्यंत छूत वाली बीमारी है। 104-106^{0}F बुखार, मुँह और खुरों के बीच घाव, फफोले, लंगड़ापन आदि इसके लक्षण हैं। इन घावों को फिटकीरी के पानी से धो सकते हैं पर इसका कोई इलाज नहीं है। आप पहले ही एफ०एम०डी० का टीका डॉक्टर से लगवा दें तो यह रोग होगा ही नहीं।

जीवाणु रोग

आंत्र क्षय

आंत्र क्षय/जहनीज रोग कुप्रबंध से फैली बीमारी है। इसमें दूध उत्पादन कम, मल पतला, भूख सामान्य परंतु प्यास ज्यादा, वजन में कमी आदि लक्षण दिखाई देते हैं। इसके लिए रिफाम्पिसीन या सट्रेप्टोमाईसिन 50 mg/kg. के हिसाब से दिया जा सकता है। परंतु दवाई महंगी है इसलिए यदि आंत्र क्षय के लक्षण दिखें तो बकरी को अपने फार्म से बाहर कर छुट्टी पाएं।

ब्रुसेला

ब्रुसेला रोग से पीड़ित बकरियों को गर्भपात हो जाता है और यह आगे चलकर बांझपन और आखिर में मृत्यु का कारण बन सकता है। गर्भ के अंतिम चरण में गर्भपात इसका एक बड़ा लक्षण है। यह उन चंद बकरी रोगों में से एक है जो बकरी से मनुष्य में आ जाते हैं। इसका इलाज बहुत महंगा है। इस रोग से प्रभावित पशुओं को बेचें भी नहीं, उन्हें तुरंत मार कर गहरे गढ्ढे में नमक डाल कर दफना दें।

ई-कोलाई

यह नवजात मेमनों में आमतौर पर खीस न पिलाने के कारण होता है। इस रोग में बुखार दस्त (पर जरूरी नहीं), ऐंठन, मुँह के आस-पास गीलापन आदि देखने को मिलता है। इसका इलाज एम्पीसीलीन 25 mg/kg और सल्फोनामाइड 100 mg/kg, सीफाड्रेसिल 10 mg/kg आदि से किया जा सकता है। पर इलाज खर्चीला है, मेमने को रेवड़ से बाहर कर देना ही अच्छा है।

थनैला

थनैला या मेस्टाइटिस थन में विकृति और सूजन की बीमारी है जो प्रबंध की कमी से होता है। रोग के आरंभिक चरण में इसका इलाज संभव है। दूध दुहने के बाद थन को साफ करके दो बार एंटीबायोटिक मलहम लगाएं। खासतौर पर टीलोक्स, मेमीटाल, कोबाक्टान, पेंडिस्ट्रीन, फ्लोक्लोक्स आदि मलहम कारगर होते हैं। इस रोग की देसी दवाई करने के लिए थन से दूध निकाल कर बोरिक ऐसिड या फिटकिरी या लाल दवाई से धोएं। सफेद मक्खन में नमक मिला कर लगाने से भी आराम होता है।

आंत्र विषाक्तता

आंत्र विषाक्तता या एंट्रोटोक्सीमीया जीवाणु से होने वाला एक विश्वव्यापी रोग है। यह विशेषत: ठंड के मौसम में होता है और विशेष रूप से नवाजातों से लेकर 6 महीने की उम्र तक ज्यादा खतरा पैदा करता है। इसमें मृत्यु दर शत प्रतिशत है। रोग हो जाने पर बचाना मुश्किल है इसलिए पहले ही इसका टीका लगा दें। यह रोग अधिक प्रोटीन वाले चारे और दाने से होता है। बरसात में हरा चारा ज्यादा देने में भी यह रोग पकड़ लेता है। एम्पीसीलीन 10 mg/kg देकर इलाज की कोशिश की जा सकती है परंतु बेहतर है टीकाकरण।

क्षय रोग

यह एक दीर्घकालीन संक्रामक रोग है। ब्रांको-न्यूमोनिया की तरह ही इसमें भी खांसी और दस्त होता है। आइसोनिपिड और स्ट्रेप्टोमाइसीन आदि लंबे समय तक देने से यह ठीक हो सकता है। परंतु इलाज इतना महंगा है कि यह अनुशंसित नहीं है। रोगी पशु को फार्म से बाहर कर दें।

सी०सी०पी०पी०

यह भी एक तरह का न्यूमोनिया यानी फेफड़े का छूत रोग है। इसमें खांसी, सांस रूकना, भीड़ में पिछड़ जाना, लेट जाना और बुखार का 106-107^{0}F तक पहुँच जाना आदि प्रमुख लक्षण हैं। आक्सीटेट्रसाईक्लीन तथा टियामुटीन का 10-15 mg/kg प्रभावशाली दवाई है।

टिटनेस

यह रोग नुकीली वस्तु से होने वाले घाव के अंदर जीवाणुओं के प्रवेश कर जाने से होता है। मेमनों के नाड़ काटते हुए हाथ या ब्लेड यदि गंदा रहे तो टेटनस का डर बना रहता है। इसमें जबड़े जकड़ जाते हैं, पलकें उल्टी, पूंछ कठोर हो जाती है तथा पेशाब लीद रूकने लगता है। लक्षण प्रगट होने पर चिकित्सा कम प्रभावशाली होता है। फिर भी पेंसिलीन, क्लोर-प्रोमाजीन 0.4 mg/kg के हिसाब से देने पर लाभ भी होता है। नाड़ काटते समय सफाई का पूरा ध्यान रखें। सबसे बड़ी सुरक्षा गर्भवती बकरियों को प्रसव से 1 महीना पहले टेटनस की सुईं लगा दी जा सकती है। मेमनों को भी टेटनस का टीका लगाना चाहिए।

ऐंथ्रैक्स

एक घातक संक्रामक बीमारी है, जीवित पशु अचानक मर जाता है। मृत पशु के मल द्वारा और नाक से काले रंग का खून निकलता है। मृत पशु का खून नहीं जमता है। इस रोग का टीका भी उपलब्ध है। इसके अलावा पेन्सीलिन 10,000 यूनिट/कि०ग्रा० और स्ट्रेप्टोमाइसीन 8-10 mg/kg. 5 दिनों तक देने से सुधार हो सकता है।

कीटनाशन

	किटाणु का नाम	उम्र	दवा देने का समय
1.	काक्सीडियोसिसि (कुकड़िया)	पहले महीने में	ऐम्प्रालियम 50-100 मि०ग्रा०/कि०ग्रा० शरीर भार-5 दिनों तक पिलाएं
2.	इंडोपैरासाइटिक (अंत: परजीवी)	पहले महीने के बाद	साल में तीन बार आइवरमैक्टीन 1 मि०ग्रा०/50 कि०ग्राम०
3.	जुएँ	---	जाड़ों से पहले और बाद मैलाथियोन पानी में स्नान
4.	किल्ली	---	जाड़ों से पहले और बाद मैलाथियोन पानी में साल में तीन बार स्नान

बकरियों का टीकाकरण-कीटनाशन कैलेंडर

टीकाकरण

रोग का नाम	प्रारंभिक टीका		टीका अवधि
	पहला टीका (उम्र)	बूस्टर टीका	
1. पी.पी.आर. (बकरी प्लेग)	2-4 महीने	---	4 साल की सुरक्षा
2. एफ.एम.डी. (खुरपका-मुँहपका)	1-3 महीने	6 महीने के बाद	हर 6 महीने पर
3. जी.पी. (बकरी चेचक)	3-5 महीने	---	साल में एक बार
4. ई०टी०	3-4 महीने 21 दिन के अंतर पर दूसरी सुई	6 महीने बाद फिर 21 दिन के अंतर पर दूसरी सुई	साल में एक बार
5. एच०एस०(गलघोंटू)	3-4 महीने	6 महीने बाद	साल में एक बार
6. टिटनेस	बकरियों के प्रत्येक प्रसव से 1 महीना पहले	---	बाकी सभी को साल में एक बार

यदि आप फार्म की शुरूआत अभी कर रहे हैं तो बारी-बारी से सभी टीके बकरियों को लगाएं। सबसे ज्यादा जरूरी है बकरियों को लाते ही पी.पी.आर. और बकरी चेचक का टीका लगाएं। गाभिन बकरियों को टिटनेस का टीका लगवा दें, और बाकी टीका मिले तो लगा दें, नहीं तो तब तक काम चलेगा बहुत ज्यादा परेशान न हों। यदि सालाना टीकाकरण का निर्णय करना हो तो फरवरी में ई०टी०, जून में एफ०एम०डी, जुलाई में एच०एस० फिर दिसंबर में एफ.एम.डी., जुलाई में एच.एस., फिर दिसंबर में एफ.एम.डी. तथा किसी भी महीने में पी.पी.आर का टीका लगवा सकते हैं। एक टीके से दूसरे टीके के बीच एक महीने का अंतराल भी होना चाहिए। सभी टीके एक ही महीने में लाते ही नहीं लगा दें। शरीर में टीका को अपना प्रभाव जमाने में समय लगता है।

प्रमुख बकरी टीकों का प्राप्ति स्थान

1. पी.पी.आर.-निदेशक, आई०वी०आर०आई० मुक्तेश्वर, नैनीताल, उत्तरांचल
2. एफ.एम.डी.-निदेशक, आई.वी.आर.आई.हब्बल, बंगलुरू, कर्नाटका
3. ई.टी.-निदेशक, आई.वी.आर.आई. इज्जतनगर, बरेली, उ०प्र०
4. एच०एस०-निदेशक, आई.वी.आर.आई. इज्जतनगर, बरेली, उ०प्र०

इंसानों की तरह ही बकरियों में भी अनेक प्रकार के रोगों की आशंका तो बनी रहती ही है, परंतु आम तौर पर बकरियों को रोग ज्यादा नहीं होता है। यदि आप फार्म की सफाई, चारा और टीकाकरण (देखें फार्म प्रबंध) का भरपूर ध्यान रखें तो बीमारियों के फैलने का डर बहुत कम होता है। यदि कभी कोई जरूरत महसूस हो तो स्थानीय पशुचिकित्सकों के अतिरिक्त केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के किसान हेल्पलाइन 0565-2763320 से संपर्क कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर अनादि के कार्यकर्ता भी आपकी यथासंभव मदद की कोशिश करेंगे। बकरी रोगों के बारे में जानने के लिए केंद्रीय बकरी संस्थान की पुस्तिकाएं पढ़ें।

सातवाँ कदम : बैंक, बाजार और सहकारिता

बकरी-फार्म लगाने की बात करते ही कई लोग सबसे पहले यह पूछते हैं कि इसके लिए कितना लोन मिलेगा। सरकार की कोई स्कीम है क्या? यह बात सही है कि निवेश के लिए ऋण आवश्यक होता है, परंतु हमारे यहाँ कई लोगों के मन में ऐसी बात बैठ गई है कि स्कीम का पैसा लेकर उसे हजम कर जाना ही असली बुद्धिमानी का काम है। ऐसे लोग जीवन के प्रति वास्तव में निराश होते हैं और यह सोचते हैं कि उनका कोई कारोबार कभी सफल नहीं हो सकता। इसलिए भागते भूत की लंगोट ही सही वाले अंदाज में पंचायत, प्रखंड और जिला ऑफिस से जो कोई भी कारोबार का पैसा मिले उसे अवश्य लेते हैं और मान कर चलते हैं कि उसे वापस नहीं करना है। जब कोई इस मंशा से ऋण लेता है कि उसे वापस नहीं करना है तो कभी सफल नहीं हो सकता। वह पहले ही मन बना लेता है कि उसे असफल ही होना है। वह मन लगा कर काम नहीं करता। यही कारण है कि हमारे राज्य में जितनी सरकारी योजनाएं सब्सिडी और ऋण पर आधारित होती हैं वे सफल नहीं हो पातीं।

हमारा मानना है कि कारोबार की शुरूआत अपने पैसे से करें और विस्तार के लिए बैंकों से ऋण लें। पहला यूनिट अपने पैसे से और अगला तीन यूनिट एवं पक्का शेड ऋण के पैसे से यह हमारी सलाह है। इससे बैंकों को भी ऋण देने में आसानी होती है, क्योंकि उन्हें भरोसा होता है कि आपको इस कारोबार का कुछ आइडिया है।

दूसरा एक मुद्दा है कि यदि पैसा हो तो कितना यूनिट एक साथ लगाना चाहिए? हमारी राय है कि यदि आपके पास पैसा हो भी तो पहले एक ही यूनिट लगा कर जाँच कर लें। यदि यह कारोबार ठीक लगता है तो 4-5 यूनिट लगा लें; चार-पाँच यूनिट का मतलब है 400-500 बकरियों-मेमनों का फार्म। यह काफी बड़ी इकाई है। इसमें पांच-दस बीघा खेत-जमीन और 5-10 कर्मचारियों की आवश्यकता होगी। इससे बड़ी इकाई संभालना थोड़ा मुश्किल होगा। वैसे कुछ राज्यों में दो हजार से दस हजार बकरियों को एक स्थान पर

रखने की सूचना भी मिलती है, परंतु उसमें पूंजी बहुत ज्यादा चाहिए। ऐसे कई फार्म असफल हो कर बंद भी हो चुके हैं। इसलिए हम लोग इस पक्ष में हैं कि व्यावसायिक बकरी पालन का कार्य 100-500 बकरी पालने वाले लोगों के हाथ में ही रहे, दस-बीस हजार पालने वाली कंपनियों के हाथ में नहीं। यदि पाँच यूनिट लगाया और साल का पाँच लाख रूपया गांव में बैठे मुनाफा आ गया तो हमारे लिए यह आदर्श स्थिति होगी। आपके पास यदि और पूंजी है तो दूसरे कारोबार में भी लगाएँ जैसे मछली, केला, रेशम, आदि के उत्पादन पर ध्यान दें। सभी अंडे एक ही टोकरी में नहीं रखना चाहिए। यदि एक फेल हो तो दूसरा संभाल ले इसकी व्यवस्था करें।

यह भी जरूरी नहीं कि एक बार यह कारोबार कर लिया तो जिंदगी भर करना ही पड़ेगा। यदि आपने पाँच साल में 20-25 लाख की पूँजी बना ली तो उस पैसे को और बड़े कारोबार में लगाया जा सकता है। यह ग्रामीण पूंजी निर्माण का एक स्रोत हो सकता है। यदि आपका अनुभव एक यूनिट लगा कर अच्छा होता है और अब आप इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं तो निकटवर्ती ग्रामीण बैंक को आवेदन कर सकते हैं। उस आवेदन में निम्नलिखित बिंदुओं की जानकारी दें।

बकरी पालन परियोजना प्रस्ताव के प्रमुख बिंदु

1. बैंक का नाम
2. कुल निवेश
3. ऋण का उद्देश्य (जैसे बकरी शेड, नलकूप, बकरी खरीद, उपकरण आदि)
4. फार्म का स्थान (पक्की सड़क एवं पशु चिकित्सालय से दूरी आदि)
5. फार्म का नक्शा
6. जमीन का लेखा-जोखा (खाता-खेसरा, स्वामित्व आदि)
7. फार्म मालिक संबंधी जानकारी (व्यवसायी का नाम, शैक्षिक योग्यता, प्राप्त प्रशिक्षण)
8. पानी की व्यवस्था
9. बकरी की नस्ल
10. बकरी की खरीद

11. रिप्लेशमेंट प्रोग्राम
12. प्रजनन की सुविधाएं
13. बकरी आवास का प्रकार (सामग्री एवं खर्च)
14. उपकरण
15. चारे-दाने की आवश्यकता और व्यवस्था
16. इलाज और टीकाकरण की व्यवस्था
17. मजदूरों की आवश्यकता एवं आपूर्ति
18. बीमा (सिर्फ 1-6 वर्ष के पशुओं के लिए मूल्य का 8.25%)
19. आय के स्रोत
20. बाजार
21. आर्थिक मूल्यांकन (कुल लागत, आय, शुद्ध आय)

100 बकरी और 5 बीजू बकरे के लिए परियोजना का आर्थिक विश्लेषण (एक नमूना)

बाड़े की निर्माण लागत	:	2,50,000
उपकरण आदि	:	25,000
पशुओं का मूल्य	:	1,25,000
कुल पूंजी निवेश	:	4,00,000
पूंजीकृत चालू लागत	:	1,00,000
कुल पूंजी की आवश्यकता	:	5,00,000
स्वयं का अंश (15%)	:	75,000
कुल बैंक ऋण	:	4,25,000

बकरी पालन से आय

कुल बिक्री योग्य मेमने	:	400 प्रतिवर्ष
बिक्री दर	:	1200 रु०
कुल आय	:	4,80,000 रु० प्रतिवर्ष
ऋण अदायगी	:	1,50,000 रु०/प्रतिवर्ष
ऋण अदायगी अवधि	:	5 वर्ष
शुद्ध आय	:	3,30,000/प्रतिवर्ष

स्वर्ण जयंती स्वरोजगार योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे के व्यक्तियों को 10 बकरी (9 मादा 1 नर) की खरीद के लिए 30, 000 रूपए बैंक से कर्ज मिल सकते हैं। अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के लिए 7500 रूपए अनुदान का प्रावधान भी है। यह योजना स्वयं सहायता समूहों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करने के लिए भी उपलब्ध कराया जाता है।

बकरी बीमा

चारों सामान्य बीमा कंपनियाँ यानी नेशनल इंश्योरेंस, न्यू इंडिया इंश्योरस, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस और ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमेटेड बकरियों का बीमा उपलब्ध कराती हैं। इसके लिए कंपनी पशुओं के मूल्य का 8.25% शुल्क प्रीमीयम के रूप में लेती है। परंतु यह बीमा सिर्फ बैंक लोन से खरीदे गए बकरियों के लिए ही किया जाता है ।

बाजार

अभी दो चार सालों तक तो आप जितनी बकरी पाल लें आपके घर से लोग बकरी-खस्सी खरीद कर ले जाएंगे। अभी निकट भविष्य में इसके लिए मार्केट खोजने की कोई समस्या नहीं है, पर आप ध्यान रखिए कि आपको मूल्य पूरा मिले। एक तो फार्म पर स्प्रिंग वाला कांटा रखें और बकरियों को जिंदा वजन करके बेचें अंदाज से नहीं। दूसरी बात कि बिक्री होली, दशहरा, ईद और बकरीद के मौके पर करें, ताकि बढ़े हुए भाव का फायदा आपको भी मिले, सिर्फ व्यापारियों को नहीं। इससे आपका मुनाफा बढ़ेगा। आप पहले से एडवांस लेकर भी बुकिंग कर सकते हैं। आप जब पालने लगेंगे तो और भी विचार सामने आएंगे।

प्रत्येक साल के कैलेंडर में होली, दशहरा, ईद और बकरीद की तारीख देख कर यह निश्चित कर लें कि अपना माल कब बेचना है। अभी रोकने में फायदा है या बेचने में इसका निश्चय पहले से करके रखना अच्छा होगा। नौ महीने के बाद मेमनों का वजन कम रफ्तार से बढ़ता है। इसलिए मांस के लिए बेचे जाने वाले मेमनों को 9 से 12 महीनों के बीच अवश्य बेच लेना चाहिए। आप अपना एक लक्ष्य मूल्य भी रख सकते हैं। जैसे यदि आपने सोच रखा है कि 2500 रू० का एक खस्सी बेचना है और कोई छः महीने में ही वह मूल्य दे रहा है तो तुरंत बेच लीजिए। कुछ पूंजी बाहर आ जाएगा। यदि लगता है कि

आगे चारे की कमी होने वाली है तो कुछ पशु बेच लीजिए। वैसे सर्दियों में मांस की मांग बढ़ जाती है, इसलिए सर्दियों में बेचने से मूल्य अधिक मिल सकता है। बकरीद में कुर्बानी का बकरा कम से कम एक साल का यानी दो दांतों वाला होना चाहिए। जबकि दुर्गाजी को कई जगह बलिदान में सिर्फ छागर (यानी बिना बधिया वाला) अर्पित किया जाता है। अपने बाजार के हिसाब से इन बातों का ख्याल रखें।

स्वयं सहायता समूह

छोटे बकरी पालकों के लिए स्वयं सहायता समूह में संगठित होकर काम करना बहुत अच्छा रास्ता है। दरअसल सरकार एक व्यक्ति के मुकाबले 10 व्यक्तियों के समूह को ऋण आसानी से देती है। इसलिए दस से बीस व्यक्तियों का अपना समूह स्थापित करें। एक बैठक आयोजित कर समूह का नाम निश्चित करें। एक रजिस्टर/कॉपी में सदस्यों का नाम और बैठक के निर्णयों को लिखते चलें जाएं। इस समूह का एक अध्यक्ष, एक सचिव और एक कोषाध्यक्ष का चुनाव एक साल के लिए करें। इस समूह की साप्ताहिक या पंद्रह दिनों में एक बैठक करें। इस समूह का एक प्रमुख कार्य नियमित पैसा बचाने की आदत डालना है। स्वयं सहायता समूह किसी भी सरकारी बैंक में समूह के नाम से खाता खोल सकते हैं। इस खाते में छः महीने के दौरान वे जितना पैसा जमा करेंगे उसका चार गुणा पैसा उन्हें सस्ते ऋण के रूप में प्राप्त हो सकता है। यह रकम 25 हजार से 3 लाख रूपए तक हो सकती है। इसके अतिरिक्त स्वयं सहायता समूह उत्पादन और बिक्री से संबंधित अन्य कार्यों के लिए भी सरकारी संस्थानों से सहायता के हकदार हो जाते हैं। इसलिए गांव के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए स्वयं सहायता समूह बहुत मददगार साबित हो सकता है। इसके गठन के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

- समूह का एक नाम रख लें
- समूह में 10-20 तक सदस्य बनाएं
- समूह में स्त्री और पुरूष दोनों सदस्य हो सकते हैं
- किसी सदस्य की उम्र 18 वर्ष से कम न हो
- ऐसे व्यक्ति को अपने समूह में न रखें जो कर्ज लेकर वापस न करने का स्वभाव रखता हो
- समूह की नियमित सप्ताह-पंद्रह दिनों में बैठक करें

- सभी निर्णय सदस्यों की सहमति से लें।
- एक रजिस्टर में सभी निर्णयों को लिखते रहें

समूह में अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष के कार्य इस प्रकार हैं:

अध्यक्ष के काम

- बैठकों की अध्यक्षता करना
- सदस्यों से पैसा के लेन-देन में ईमानदारी का माहौल बनना
- समूह को प्रभावी निर्णय लेने में मदद करना
- सभी सदस्यों को पास बुक (बचत खाता) मिलने की गारंटी करना

सचिव के काम

- बैठकों की कार्यवाही लिखना
- अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्षता करना
- बचत और ऋण का हिसाब रखने में कोषाध्यक्ष की मदद करना

कोषाध्यक्ष के काम

- पैसे की सुरक्षा करना
- बचत, ऋण संबंधी लेने-देन का हिसाब रखना
- सदस्यों की पास बुक में प्राप्त धनराशि को लिखना

सहकारिता

नए बकरी पालकों को समझ कर चलना चाहिए कि छोटे और मध्यम उत्पादक यदि अकेले चलेंगे तो बाजार में लुट जाएंगे। इसके लिए सहकारिता और संगठन बनाना अनिवार्य है। पिछले दिनों कई मुर्गी-पालक बरबाद हो गए। यदि इन पोल्ट्री-फार्म वालों ने अपना फेडरेशन बना कर सरकार से बर्ड-फ्लू का हर्जाना हासिल किया होता तो आज उन्हें अपना व्यवसाय बंद करने की नौबत ही नहीं आती। केरल में किसानों ने कॉफी बोर्ड और रबड़ बोर्ड के माध्यम से कई बार अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में उतार चढ़ाव का मुकाबला सरकार की मदद से किया है। पंजाब, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र आदि के किसानों ने भी सहकारिता और संगठन के माध्यम से अपने कारोबार को बचाया है। यहाँ हमें भी इस दिशा में सोचना चाहिए। परंतु उसके लिए जरूरी है कि लोग पहले बकरी फार्म लगाना तो शुरू करें, तभी उनका संगठन बनेगा।

सहकारिता का नारा है : **साथ खरीदो, साथ बेचो।** अपने लागत मूल्य को कम करने के लिए भूसा, दवाई, दाना आदि यदि आप साथ मिल कर खरीदते हैं, तो सफलता जरूर मिलेगी। इसी तरह जैसे ही बकरी उत्पादन थोड़ा आगे बढ़ेगा तो व्यापारी एक किसान को दूसरे के खिलाफ खड़ा करके कीमत गिराने लगेंगे। वहाँ आपको साथ मिल कर बेचने का इंतजाम करना होगा। संभव है जैसे अमूल ने साथ मिलकर दूध बेचने के लिए एक ब्रांड बनाया वैसे ही आपको भी एक ब्रांड की जरूरत पड़ेगी।

इसी तरह कुछ लोग साथ मिलकर 'मीट शॉप' चला सकते हैं। इससे मुनाफा काफी बढ़ जाएगा। परंतु एक छोटे मीट शॉप को चलाने के लिए भी रोज 5-10 खस्सी चाहिए, यानी महीने में करीब 150-300 और साल में 1800-3600। इतना खस्सी कोई एक फार्म आसानी से मुहैय्या नहीं करा सकते। दस लोग मिल कर काम करेंगे तो एक दुकान चलेगी। इसलिए संगठन बनाना और सहकारी संस्था चलाना मुनाफे के लिए बहुत जरूरी है।

इतना ही नहीं यदि आप अकेले एक पशुचिकित्सक से सलाह लेते हैं तो महंगा पड़ेगा- पूरा फेडरेशन मिलकर यदि डॉक्टरों की सेवा ले तो सस्ता पड़ेगा। बिहार में तो कई दवाईयां मिलती ही नहीं है, क्योंकि पहले किसी बकरी पालक ने ये दवाईयाँ मांगी ही नहीं। यदि फेडरेशन हो तो बाहर से दवाईयाँ मंगाई जा सकती हैं। राज्य सरकार पर भी FMD, PPR, HS, ET, GP आदि के टीके उपलब्ध कराने के लिए दवाब बनाया जा सकता है। यह सारा काम आप सहकारिकता-संगठन के माध्यम से ही कर सकते हैं। बिहार के पिछड़ेपन का एक कारण यह भी है कि यहाँ सहकारिता आंदोलन का गला उसके बचपन में ही घोंट दिया गया था।

नई बाजार व्यवस्था में एक अवधारणा है : 'कांट्रैक्ट फार्मिंग' यानी किसान फसल कटने से पहले ही व्यापारियों और कंपनियों से बिक्री की मात्रा और दर का करार कर लेते हैं। इससे किसान निश्चित हो कर उसमें पूंजी निवेश करता है। हाल में गुजरात के किसानों ने केले की ऐसी खेती से भारी मुनाफा कमाया है। हमारे बकरी पालक भी यदि बड़ी कंपनियों से आपूर्ति का करार कर लें तो उन्हें साधारण दर से ज्यादा पैसा मिलेगा। पर उसके लिए आपको एक खास उम्र और खास वजन के स्वस्थ पशुओं की आपूर्ति बड़ी संख्या में करने का वादा करना होगा। बड़ी कंपनियाँ 50-100 पशुओं के लिए आपके पास नहीं आएंगी। आप यदि 1 साल का स्वस्थ खस्सी जिसका वजन

18-20 किलो के आसपास हो, प्रतिवर्ष पचास हजार-एक लाख की संख्या में आपूर्ति करने का करार या 'कॉन्ट्रैक्ट' किसी बड़ी कंपनी के साथ करें, तो आपको साधारण कसाई के हाथों बेचने से ज्यादा पैसा अवश्य मिलेगा। परंतु इसके लिए जो साफ-सफाई, स्वास्थ्य, मात्रा, गुणवत्ता आदि की जरूरत पड़ेगी, वह संगठन के माध्यम से ही छोटे और मंझोले उत्पादक हासिल कर सकते हैं। इस सफलता का एक छोटा सा सूत्र है कि आप सिर्फ स्वयं ही नहीं, अपने इलाके के दूसरे लोगों को भी इस कारोबार में आने की प्रेरणा दें और उन्हें मदद करें। अनादि (एक्ट नाऊ फार अल्टरनेटिव डेवलप़मेंट इनिसिएटिव) हर कदम पर आपके साथ रहेगा। आवश्यकता होने पर केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा के किसान हेल्पलाइन फोन नं० 0565-2763320 की मदद लें। आइए ईमानदारी से कोशिश करें और बिहार एवं भारत को खुशहाल बनाने में अपना योगदान दें।